

अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

नवीन सामाजिक शोध

संस्थापक प्रधान संपादक
स्व. डॉ. जी. सी. सक्सेना

●—●

प्रधान संपादक
राजेन्द्र सक्सेना

●—●

प्रबंध संपादक
अभिजीत सक्सेना

●—●

संपादक
श्रीमति सविता सक्सेना

●—●

उप संपादक
डॉ. संजय अग्रवाल (चिकित्सक)

डॉ. संतोष धुर्वे (समाजशास्त्री)

डॉ. विजय दुबे (वाणिज्य) एम.बी.ए.

●—●

लेख सम्पादक

डॉ अनुपमा सुरेश

●—●

शोध अधिकारी

डॉ यू.पी.शुक्ला

●—●

ग्राफिक्स

राज यादव

वर्ष - 10 अंक - 9 (कुल अंक 116) नवम्बर 2018

R.N.I. M.P.HIN/2009/29572

ISSN-0975-4431

संपादकीय कार्यालय: 25, रूप नगर कॉलोनी, जे.के. रोड

भोपाल-462 023 (म.प्र.) दूरभाष : 09300279796, 09425704990

E-mail : naveensamajikshodh@yahoo.com

website : www.naveensamajikshodh.com

विदेशों में क्षेत्रीय कार्यालय : (विदेशी विषय विशेषज्ञ संपादक)

1. डॉ. राम भारद्वाज चिकित्सक

पो. बॉ. नं. 161, पोस्टल कोड नं. 119, सहम सुल्तानेट ऑफ ओमान

2. प्रो. डॉ. सुधाकर कोटा अर्थशास्त्री

प्रोफेसर इकोनॉमिक्स एण्ड मार्केटिंग, स्कूल ऑफ बिजनेस, एम.ए.ए. यूनिवर्सिटी, एम.ए.ए. यूनिवर्सिटी, एम.ए.ए. यूनिवर्सिटी, एम.ए.ए. यूनिवर्सिटी

3. कविता शुक्ला असिस्टेंट प्रोफेसर,

111, शेख रशीद बिल्डिंग, शेख जाफेद रोड, मुंबई, मुंबई

4. डॉ. प्रिंस डेविड दंत चिकित्सक

11, अलब्रेस्ट एवेन्यू, मार्गट रिक्रिल, ओकलेण्ड 1041, न्यूजीलैण्ड

5. श्री सजग चतुर्वेदी

स्टेनफोर्ड, यूनिवर्सिटी, डायलैण्ड

6. श्रीमति ऋति चतुर्वेदी, कनाडा

7. श्रीमति प्रतिभा, कनाडा

8. डॉ. उमेश रस्तोगी, संत

सदस्यता शुल्क : देश में : साधारण अंक 50/- वार्षिक : 500/-

आजीवन सदस्यता : 5000/-

विदेशों में : साधारण अंक : 9 डॉलर, वार्षिक : 90 डॉलर

सारे भुगतान (मनीऑर्डर/चेक/ड्राफ्ट) नवीन सामाजिक शोध के नाम से लिखे जायें।

चेक पे भुगतान करने पर रु. 30/- अतिरिक्त भेजें।

स्वयंसाधिका, पुस्तक, प्रकाशक : राजेन्द्र सक्सेना द्वारा राजा प्रिंटिंग प्रेस, प्लॉट नं.2 लाला लालन

राव कालोनी, आगदिल कुरातारा भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं 25, रूप नगर कॉलोनी, जे.के.

रोड, भोपाल-462 023 (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक - श्रीमति सविता सक्सेना।

कभी लेखकों में लेखकों के अपने मौखिक विचार हैं। संपादक अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। हमारा संपादक मंडल पूर्णतः अनैतिक एवं अध्यात्मिक है। विवाद की स्थिति में सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।

नवीन सामाजिक शोध

इस अंक में

1. मध्य प्रदेश में प्रतिभा पर्व:बृजेश सक्सेना —6
2. Review on Factors Discouraging.....Sarita Rai*—14
- 3.DIMENSIONS AND PROCESS.....Pragati Choudhary—27
- 4.पंचायती राज में स्वयं सहायताधनंजय बर्लिंगे—32
5. देश के सामाजिक आर्थिक विकासद.....गीता सिंह—38
6. CAPITAL STRUCTURE ANALYSISNarayan Jamod—41
7. Genetic Component inKavita singh—52
- 8.भारतीय जीवन बीमा निगम.....सुनीता मौर्य —63
9. भारतीय जीवन बीमा निगम के लाभ—हानिसुनीता मौर्य —66
10. मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजीअंकित जैन —69

सलाहकार मंडल

- प्रो. डॉ. आर्ह.एस. चौहान पूर्व कुलपति, वरफतवस्ताह एरु
मोच विश्वविद्यालय मोपाल-म.प्र. | फोन: 0755-2424777
- प्रो. डॉ. विनोद पी. सक्सेना , पूर्व कुलपति, चीवाची विश्वविद्यालय
ग्वाशियर म.प्र. | फोन 0755-2628055
- प्रो. डॉ. संतोष कुमार श्रीवास्तव
पूर्व कुलपति डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर-म.प्र.
- प्रो. डॉ. राजपाल सिंह सदस्य सलाहकार यूनीसी (उच्च शिक्षा)
भारत सरकार मो. 9425028689
- ,डॉ.आर.एम श्रीवास्तव पूर्व प्रार्चय, मोतीलाल विज्ञान महा विद्यालय
मोपाल मध्यप्रदेश मानव मो.9826286410

संपादकीय

दिल्ली में फिर से लागू होगा ऑड-ईवन! जानलेवा स्तर तक पहुंच गया है प्रदूषण का स्तर

दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण की समस्या बेहद गंभीर होती जा रही है। पड़ोसी राज्य हरियाणा और पंजाब में लगातार किसानों के द्वारा जलाई जा रही पराली की वजह से दिल्ली की आबोहवा बहुत जहरीली हो गई है। ऐसे में 1 नवंबर से राजधानी दिल्ली में प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान लागू किया जाएगा। इसके अलावा फिर से ऑड-ईवन को लागू करने पर भी विचार किया जा सकता है।

ऑड-ईवन फिर से हो सकता है लागू

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अगर आने वाले दिनों में दिल्ली की हवा में सुधार नहीं होता है तो फिर से ऑड-ईवन को लागू किए जाने पर विचार किया जा सकता है। आपको बता दें कि दिल्ली में इससे पहले भी ऑड-ईवन व्यवस्था को लागू किया जा चुका है।

दिल्ली में लागू होगा ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान

वहीं दूसरी तरफ मंगलवार को ईपीसीए के चेयरमैन भूरे लाल ने भी प्रदूषण की गंभीर समस्या को देखते हुए 1 नवंबर से दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान लागू करने का ऐलान किया है। साथ ही उन्होंने कहा है कि अगर दिल्ली और आसपास के इलाकों में अगर अगले कुछ दिनों में हालात नहीं सुधरे तो निजी वाहनों पर रोक लगा दी जाएगी। ऐसे में जनता को पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ही सहारा लेना होगा।

भयावह स्तर पर पहुंचा पीएम 2.5

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के जारी आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में वायु गुणवत्ता 397 दर्ज की गई जो %गंभीर% स्तर के करीब है और इस मौसम का सबसे ज्यादा प्रदूषण है। दिल्ली के 17 इलाकों में वायु गुणवत्ता गंभीर स्तर पर जा पहुंची है। एसएएफआर के अनुसार मंगलवार को दिल्ली में पीएम 2.5, 251 और पीएम 10 का स्तर 453 दर्ज किया गया है। हवा में बढ़ने वाले बारीक प्रदूषण के कण स्वास्थ्य के लिए ज्यादा चिंताजनक हो सकते हैं।

मध्य प्रदेश में प्रतिभा पर्व: गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु सार्थक पहल

बृजेश सक्सेना
शोधार्थी,
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, म.प्र.

डॉ. अश्विनी गर्ग
सहायक प्राध्यापक,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
(RIE-NCERT)
भोपाल, म.प्र.

सारांश : मध्यप्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में व्यापक प्रयासकिये गये हैं। इन्ही प्रयासों के क्रम में एक प्रयास 'प्रतिभा पर्व' है। प्रतिभा पर्व एक व्यापक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश की सभी शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करना और शिक्षा की गुणवत्ता की सही-सही स्थिति ज्ञात करना है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक के साथ-साथ सह शैक्षिक गतिविधियों का भी आंकलन किया जाता है। 'प्रतिभा पर्व'के आधार पर किये गये मूल्यांकन के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों की समीक्षा कर प्रदेश के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं शालेय व्यवस्था में सुधार हेतु कार्यक्रम एवं रणनीति निर्धारित की जाती है। वर्ष 2017-18 में आयोजित 'प्रतिभा पर्व'में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर बच्चों में गणित और भाषा विषयों में भी औसत स्तर की दक्षताएं पाई गईं। प्रस्तुत शोध आलेख में वर्ष 2017-18 में किये गये मूल्यांकन से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण कर बच्चों की उपलब्धि और मध्यप्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता की स्थिति का आकलन किया गया है।

मनुष्य के जीवन एवं विकास में प्रारंभिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक बच्चे को उसकी पूर्ण क्षमता के अनुरूप विकसित होने में उसे गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करना शासन की प्रमुख जिम्मेदारी है। मध्यप्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में व्यापक प्रयास किये गये हैं। इन्ही प्रयासों के क्रम में एक प्रयास 'प्रतिभा पर्व' है। 'प्रतिभा पर्व' एक व्यापक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश की सभी शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करना और शिक्षा की गुणवत्ता की सही-सही स्थिति ज्ञात करना है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक के साथ-साथ सहशैक्षिक गतिविधियों का भी आकलन किया जाता है। 'प्रतिभा पर्व'के आधार पर किये गये मूल्यांकन के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों की समीक्षा कर प्रदेश के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं शालेय व्यवस्था में सुधार हेतु कार्यक्रम एवं रणनीति

निर्धारित की जाती है।

सर्व शिक्षा अभियान और निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत किये गये विभिन्न प्रावधानों के द्वारा यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि निष्पक्षता और समानता के साथ शिक्षा की गुणवत्ता बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए सुगम हो तथा बच्चा उसकी क्षमता के अनुसार निर्धारित समय-सीमा के भीतर सामर्थ्यता के स्तर को प्राप्त कर सके। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में गुणवत्ता विकास, विद्यार्थी समय-सीमा में अपनी आयु एवं कक्षानुरूप दक्षता प्राप्त कर सके इसके लिए प्रदेश में गतिविधि आधारित शिक्षण, सक्रिय अधिगम प्रविधि आदि के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था की गई है। विद्यालयों को सहायक शैक्षिक सामग्री, विज्ञान एवं गणित की अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए विज्ञान एवं गणित किट्स प्रदाय किए गए हैं। विद्यालयों में भौतिक संसाधन तथा शाला भवन, पुस्तकालय, खेल सामग्री, बालक बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय, स्वच्छ जल, खेल मैदान आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

मध्यप्रदेश में प्रतिभा पर्व का आयोजन शैक्षणिक सत्र 2011-12 से प्रारम्भ किया गया। शिक्षण सत्र 2017-18 के लिए प्रदेश के सभी प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में एक साथ 'प्रतिभा पर्व' का आयोजन 5-7 दिसम्बर 2017 तक किया गया। प्रतिभा पर्व के उद्देश्यों में शिक्षा की गुणवत्ता की सही सही स्थिति ज्ञात करना, बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति शासन की प्रतिबद्धता एवं प्राथमिकता दर्शाना एवं समाज को संवेदित करना, प्रदेश के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सुधार हेतु कार्यक्रमों की रणनीति निर्धारित करना, अपेक्षित दक्षता हासिल न कर पाने वाले बच्चों के लिए उपचारात्मक/निदानात्मक कदम उठाना, बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति शिक्षकों, शिक्षा प्रशासन, जन प्रतिनिधियों एवं समाज को उत्तरदायी बनाना, और शाला संचालन व सुविधाओं की सही सही स्थिति ज्ञात करना तथा आवश्यक सुधार करना प्रमुख हैं। इसके अन्तर्गत शैक्षिक मूल्यांकन के लिए कक्षा 3, 5 व 8 के प्रश्न पत्रों को राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे, छौद्धके टूल्स के अनुरूप विकसित किया गया। पूरे प्रदेश की शालाओं में एक साथ मूल्यांकन कार्य किया गया, शाला सिद्धि' शालाओं में गणित व विज्ञान विषय में ओएमआर शीट के माध्यम से बाह्य मूल्यांकन कराया गया और इसके पश्चात बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं का प्रश्नवार विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण के आधार पर बच्चों के सीखने में आ रही कठिनाईयों और उन्हें सिखाने में शिक्षकों के अकादमिक गेप्स को चिन्हित कर सुधारात्मक प्रयास किए गये हैं। बच्चों के सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत कर बच्चों के मनोबल को बढ़ाने तथा बच्चों में स्वस्थ प्रतियोगिता के भाव को विकसित करने के उद्देश्य से प्रतिभा पर्व के तीसरे दिन अर्थात् 7 दिसम्बर 2017 को सभी विद्यालयों में बालसभा का आयोजन, वार्षिकोत्सव का संचालन, बाल केबिनेट द्वारा किया गया। बालसभा में शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों, जनप्रतिनिधियों, पालकों को आमंत्रित कर बच्चों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद आदि गतिविधियों का अवलोकन तथा कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता सुनिश्चित की गई।

प्रतिभापर्व 2017-18 के आंकड़ों के आधार पर कक्षा 6,7 एवम 8 के बच्चों की उपलब्धि का विश्लेषण विभिन्न शीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है।

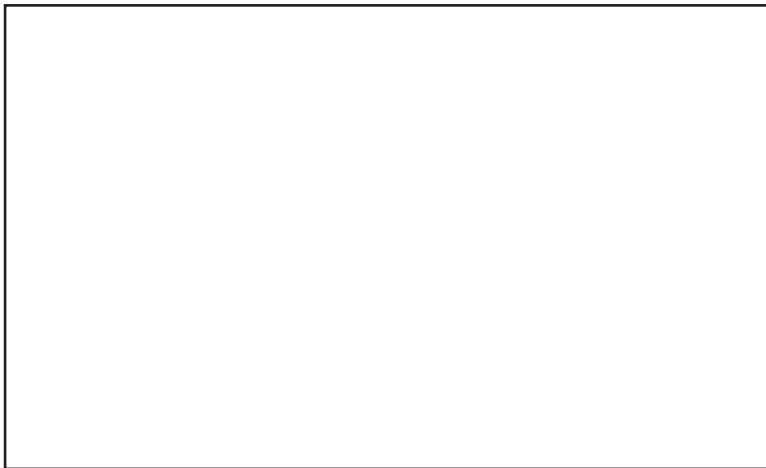
प्रतिभापर्व 2017-18 में 80168 प्राथमिक और 30086 माध्यमिक शालाओं के कुल 6296746 बच्चों ने भाग लिया जिनमें से 3866905 बच्चे प्राथमिक और 2429841 बच्चे माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत थे। प्रतिभापर्व के आधार पर बच्चों की औसत समग्र उपलब्धि B (34.00%) एवम C (35.00%) ग्रेड में सर्वाधिक रही। B और C ग्रेड की तुलना में A (24.00%) ग्रेड में यह कम रही। प्राथमिक स्तर पर बच्चों का प्रदर्शन B (50.00%) और A (35.00%) ग्रेड में सर्वाधिक रहा। माध्यमिक स्तर पर भी B (48.00%) और I (33.00%) ग्रेड में बच्चों की उपलब्धि सर्वाधिक रही।

माध्यमिक स्तर पर बच्चों की अंग्रेजी विषय में कक्षा 6 और 7 में 37.19 और 37.96 प्रतिशत बच्चे क्रमशः C और D ग्रेड में रहे। कक्षा 8 में सर्वाधिक 33.57 बच्चों ने I ग्रेड हासिल की। अंग्रेजी विषय में इस उपलब्धि को कक्षावार हम निम्नांकित सारणी से देख सकते हैं,

सारणी-1

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अंग्रेजी में उपलब्धि

इसे हम निम्नांकित ग्राफ की सहायता से समझ सकते हैं-



हिन्दी विषय में माध्यमिक स्तर पर बच्चों की कक्षावार उपलब्धि को देखें तो हम पाते हैं कि कक्षा 6 और 7 में आधे से भी अधिक कमशः 38.40 और 30.40 प्रतिशत बच्चों ने कमशः C और D ग्रेड में उपलब्धि हासिल की। कक्षा 8 में सर्वाधिक 33.38 और 34.34 प्रतिशत बच्चों ने ग्रेड हासिल की। इसे हम निम्नांकित सारणी से देख सकते हैं,

सारणी-2
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की हिन्दी में उपलब्धि
प्रतिशत में

इसे हम निम्नांकित ग्राफ की सहायता से समझ सकते हैं –

माध्यमिक स्तर पर गणित विषय में कक्षा 6, 7 और 8 में सर्वाधिक बच्चों ने कमशः C और D ग्रेड में उपलब्धि हासिल की। इसे हम निम्नांकित सारणी से देख सकते हैं,

सारणी-3
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की गणित में उपलब्धि
प्रतिशत में

इसे हम निम्नांकित ग्राफ की सहायता से समझ सकते हैं -

संस्कृत विषय में कक्षा 6 और 7 में सर्वाधिक बच्चों ने क्रमशः C,D और B ग्रेड में उपलब्धि हासिल की। तीनों ही कक्षाओं में अपेक्षाकृत कम बच्चों ने। ग्रेड की दक्षताएं हासिल की। इसे निम्नांकित सारणी में दिखाया गया है,

सारणी-4
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संस्कृत में उपलब्धि
प्रतिशत में

इसे हम निम्नांकित ग्राफ की सहायता से समझ सकते हैं—

विज्ञान विषय में बच्चों की उपलब्धि कक्षावार मिश्रित रही। कक्षा 6 और 7 में सर्वाधिक बच्चों ने क्रमशः C,D और B ग्रेड में उपलब्धि हासिल की। कक्षा 8 में क्रमशः 37.48 और 32.87 प्रतिशत बच्चों ने। ग्रेड की दक्षताएं हासिल की, जिसे निम्नांकित सारणी में दिखाया गया है,

सारणी-5
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विज्ञान में उपलब्धि
प्रतिशत में

इसे निम्नांकित ग्राफ की सहायता से भी स्पष्ट किया गया है,

सामाजिक विज्ञान विषय में कक्षा 6 और 7 में सर्वाधिक बच्चों ने क्रमशः C, D और B ग्रेड में उपलब्धि हासिल की। कक्षा 8 में क्रमशः 33.91 और 31.70 प्रतिशत बच्चों ने क्रमशः C और B ग्रेड में उपलब्धि व अपेक्षित दक्षताएं हासिल की। इसे हम निम्नांकित सारणी से देख सकते हैं,

सारणी-6
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान में उपलब्धि
प्रतिशत में

सामाजिक विज्ञान विषय में बच्चों की कक्षावार मिश्रित उपलब्धि को निम्नांकित ग्राफ से समझ सकते हैं,

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि,

— प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में बच्चों का समग्र उपलब्धि स्तर B(34.00%) और C(35.00%) ग्रेड का था। केवल प्राथमिक कक्षाओं में सर्वाधिक बच्चे B (50.00%) ग्रेड की दक्षताएं प्रदर्शित कर रहे थे।

केवल माध्यमिक कक्षाओं में भी सर्वाधिक बच्चे B (48.00%) ग्रेड की दक्षताएं प्रदर्शित कर रहे थे।

— कक्षा 6 एवं 7 में अंग्रेजी विषय में सर्वाधिक बच्चों की उपलब्धि B और C ग्रेड की रहीं जबकि कक्षा 8

- में बच्चों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर अर्थात **B (31.20%)** और **(33.57%)** ग्रेड का रहा।
- हिन्दी विषय में कक्षा 6 एवं 7 में सर्वाधिक बच्चों की उपलब्धि क्रमशः औरक ग्रेड की रहीं जबकि कक्षा 8 में बच्चों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर अर्थात **A(33.38%)** और **B(34.43%)** ग्रेड का रहा।
 - संस्कृत विषय में कक्षा 6 एवं 7 में बच्चों की उपलब्धि **C** और **D** ग्रेड की रहीं जबकि कक्षा 8 में बच्चों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत मिश्रित अर्थात **B (33.93%)C (28.83%)** और **D(28.83%)** ग्रेड का रहा।
 - गणित विषय में कक्षा 6,7 एवं 8 में बच्चों की उपलब्धि **C** औरक ग्रेड की रहीं ।
 - कक्षा 6 एवं 7 में विज्ञान विषय में बच्चों की उपलब्धि **C** और **D** ग्रेड की रहीं जबकि कक्षा 8 में बच्चों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर अर्थात **(37.48%)** और **B (32.87%)** ग्रेड में अधिक रहा।
 - सामाजिक विज्ञान विषय में कक्षा 6 एवं 7 में बच्चों की उपलब्धि **C** और **D** ग्रेड की रहीं जबकि कक्षा 8 में बच्चों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर अर्थात **A (31.70%)** और **B (33.91%)** ग्रेड में अधिक रहा।

इस प्रकार प्रतिभापर्व 2017–18 के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक बच्चों का प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर प्रदर्शन **B** ग्रेड स्तर का पाया गया। गणित विषय में उपलब्धि स्तर न्यूनतम पाया गया। इसी तरह भाषाओं में भी अपेक्षित दक्षताओं में वृद्धि के लिए प्रयास करने और इस हेतु विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता है क्योंकि भाषाओं में दक्षता ही अन्य विषयों में अच्छे प्रदर्शन के लिए आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निष्कर्ष रूप में इस आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता प्राप्ति की दिशा में व्यापक सुधार और कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

संदर्भ:—

- ◊ ebsite- <http://www.educationportal.mp.gov.in/PratibhaParv/>
- [educationportal.mp.gov.in](http://www.educationportal.mp.gov.in)
- <http://mhrd.gov.in/>
- shaalasiddhi.nuepa.org
- www.mp.shalasiddhi.in

राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा समय समय पर प्रसारित आदेश

Review on Factors Discouraging the Learning in Mathematics at Elementary Level

Sarita Rai*
Research Scholar,
Barkatullah University,
Bhopal

Dr. A.K. Garg**
Assistant Professor,
Regional Institute of
Education, Bhopal

Abstract-

Since last decade there has been much advancement in the field of education. Humans have come across various techniques to identify the difficulties faced by children in their studies (focusing on Mathematics). In the study author focuses on the learning difficulties faced by students especially in Mathematics subject. The design of research was simple which consisted of the sample of schools of four different districts of middle school classes. Research focuses on the identification of gaps in learning and its causes. It also focuses on evaluation of difficulty level of questions and attitude of teachers towards the elementary mathematics. It examined the distinctive information writings from the potential members. From the examination and elucidation of information, it is inferred that understudies, educators and guardians need to assume an imperative part as key also, supplier of sound condition for development of pass rate separately. Educators absence of linkage between new numerical idea and already learned science structure, Mathematics nervousness, negative feeling of Mathematics, financial condition and their instructive foundations, school administration framework, absence of framework of school and absence of consistent appraisal arrangement of school are primary driver of troubles in learning mathematics.

Introduction

Given the worries of Mathematics, it is basic that all classroom instructors from the early years to senior optional use confirm based ways to deal with educating and learning in Mathematics, Especially to help those with Mathematics Learning Difficulties (MLD). For two reasons, this is certifiably not a straightforward assignment. To start with, in spite of long periods of national pledge to prove based approaches and educational programs activities in Australia and New Zealand to guarantee that all understudies approach a top notch

instruction, there is little confirmation to date that these undertakings have had a critical positive effect on the Mathematics accomplishment of understudies considered 'low-achievers' or 'in danger' (Hoad, Munro, Pearn, Rowe, and Rowe, 2005)[6]. Second, keeping in mind the end goal to pick up a profound comprehension of the key issues and meeting proof for best practices in supporting understudies with MLD, instructors who wish to embrace look; into MLD must incorporate confirmation from changed points of view crosswise over Mathematics Education (ME), Learning Difficulties (LD) and Special Education (SE).

The reason for this paper is to address this second test by condensing discoveries from an audit of current writing educating talk about understudies with MLD and proposing steps that should be taken with the end goal for MLD to be better comprehended.

Review of the Literature

The relevant literature to support students with mathematics learning difficulties (MLD), is generated across three research domains: Mathematics Education, Learning Difficulties and Special Education. As a result, to support these students, educators must spread their horizons in order to overcome disciplinary boundaries and challenges raised by different perspectives, concepts and understandings. The research draws upon a review of recent study (2008-2012) Australasian literature amongst the three domains and introduces steps that need to be followed if educators are to be informed about effective teaching and learning practices for supporting students with MLD [7]. Main Purpose was to develop a systematic research agenda to address the intransigent problems faced by students with MLD. While there is recent evidence of significant and innovative studies trailing intervention programs or practice-based projects on MLD, at the same time, there has been a noticeable decline relating to reviews conducted on MLD. This condition needs to be paid attention on, if investigators and policy makers are to give guidance on effective mathematics research and intervention programs. Mathematics is an associate inherently group action, within which a community trained person(Mathematical Scientist) engages within the scientific patterns, i.e. systematic makes an attempt supported observation, study and examination, to work out the character or principle of regularities in system.

The tools of Mathematics include abstraction, representational process and symbolic manipulation. Also being trained within the use of those tools no additional rule implies that one thinks mathematically, as knowing of use of search tools makes one a craftsman. Learning to suppose mathematically suggests the following:

- (a) Developing a mathematical purpose of reading; valuing the method of Mathematics, Mathematization and abstraction and having the predilection to use them.
- (b) Developing ability with the help of the trade and victimization the tools within the serv-

ice of the goal of understanding. Structure mathematics studies by scene creation (schoenfeld 1992).

Mathematics is considered a queen of sciences, because it is employed as a tool of research in varied alternative, discipline like Engineering, life science, design, Commerce, economic science and even Humanities.

To know varied alternative discipline information of Mathematics is totally incredibly essential. Currently a few days Mathematics is indispensable for career building. Except for these reasons we tend to develop liking towards Mathematics. This behavior of humans towards Mathematics denotes interest or feeling towards learning Mathematics. Study of the relevant literature shows the attitude of student towards Mathematics has been most researched topic for ages. Some studies reveal consistency across countries and age levels among a rustic, is that the average level of liking towards Mathematics by students. The researchers, however, reveal that there's a marked distinction in liking towards Mathematics between the 10 year old and fourteen year old towards Mathematics. In countries wherever there's an emerging stress on students learning towards Mathematics, and tutorial accomplishment among secondary level student for industrial and technological development, there's less, favorable learning outcomes towards Mathematics. However in counties that have earned high level technological and industrial development, the findings show inclination towards Mathematics is additional natural. Studies additionally reveal that boys hold additional interest towards Mathematics. Whereas researching the interest of student and teacher towards Mathematics also author discovered students and teachers faced varied issues within the method of learning and teaching Mathematics. Thus during this research an endeavour has been created to search out varied by different opinions of students in learning Mathematics and issues faced by academics in teaching the topic. Mathematics may be a quantitative subject that involves and evolves the event of psychological feature talents like thinking (Shaffer, 2001). Reasoning skills are vital for fulfillments in Mathematics and alternative subject's students study in several faculties. Mathematics, significantly, may be a base for all scientific and technological studies. To boot, Mathematics has high relevancy and sensible applications to several real-life things and issues. It's also a key and mandatory subject in several college systems. In Brunei Darussalam primary and secondary faculties, Mathematics may be a core subject. Pivotal because it could also be, the study of Mathematics has but sadly been harsh for several students. Like elsewhere within the world, students in Brunei faculties have a large vary of issues with Mathematics. Mathematics is one amongst the varsity subjects within which several students typically perform poorly. Wong, Omar, and terrorist group (2004) noted

a spread of Mathematics issues that young students in Brunei pre-schools have. For college child in Brunei primary and secondary faculties the issues are discovered to flow from to lack of correct understanding of mathematical language and mistaking of mathematical ideas (Anit & Suffolk, 2001; Chin & Clements, 2001; Vaiyatvutjamai & Clements, 2004). Students' issues in learning Mathematics could increase with implementation of national education reforms like comprehensive education, in 1998 (Ministry of Education, 1997), the National Education System for the twenty first Century referred to as SPN21 program (Ministry of Education, 2007), and introduction of the education programme for presented / gifted students (Ministry of Education, 2008). Although designed to enhance access to education for all (EFA) and lift the standard of education, these reforms probably to cause issues to each teaching and learning. As an example the instructors' of teaching and assessing Mathematics in comprehensive faculties might also got to be reformed. Additionally, the teaching and analysis of integrated mathematical skills to students with learning difficulties in comprehensive faculties below the program reforms may be quite difficult. To achieve success, these program changes would possibly need a reform of the varsity assessments (internal and external examinations) to force instructors to show the new contents and skills. The event of the Mathematics screening tests for lower and higher school students in Brunei has helped to spot further issues students have in learning Mathematics that early intervention methods got to specialize in and address (Yusop, Douglas, & Mak, 2001). But mere identification of issues is, in itself, not enough. Researches equally vital goal is to find solutions to the known issues since not all students' issues in Mathematics are often prevented Brunei studies based mostly on this line of argument have stressed the importance of victimization appropriate ways to show Mathematics to students particularly the slow learners (Ahmad, 2001; Veloo & Diah, 2004). It's more believed that some tutorial techniques would possibly improve students' attitudes towards mathematics (Rajagopal & Bakar, 2004). What is more it seems there's additionally a desire to deal with the numerous and varied issues of Mathematics academics within the country (Yoong., Khalid., & Fung, 2001). Unless teachers' skilled development coaching be addressed sufficiently, students' issues in teaching and learning Mathematics probably to persist. Previous analysis from elsewhere showed that regular college academics were, in general, against having disabled learners in their lecture rooms (Jones et al., 1978; Jamieson, 1984; Knoff, 1985; Myles & Simpson, 1989). but one recent study (Mark, Mohidin, Koay, & Mundia, 2008) found that Brunei school academics were positive to the concept of as well as LD Mathematics students in their lecture rooms and were additionally willing to help them.

The prime objective of the paper is to review the factors which lead to difficulties in

Mathematics at Elementary Level

The metaphysics during this study is that there are multiple realities. The philosophy behind this study is that the data we have accumulated from the Mathematics learners is subjective. The analysis methodology incorporated here is qualitative. Qualitative technique could be a way of inquiry that explores phenomena in their natural setting and uses multi-method to interpret, understand, make a method for and innovate the means for them [6]. Qualitative analysis requires multiple strategies, sometimes the studies including global scenarios and it contains a lot of realistic approaches [1]. Analysis style is additionally a ways set to up of the project that sets out the broad structure of the analysis. There is a necessary demand for all analysis of no particular pattern [5]. It's involved with what, whom, how, and why? The question 'how to observe?' is this phenomena directly involved with the method side of the analysis style. Analysis style, paradigm, or approach could be a favor deemed in doing analysis. According to Creswell [6] there are three dimensional analysis designs- qualitative, quantitative and mixed-method. In this study, it had been following a qualitative analysis style. The qualitative analysis used in the context and setting to look for a deeper understanding of the person being studied [4]. During this regard, [8] explain: Qualitative analysis is a multi-method focused, involving an interpretative, realistic approach towards its curriculum in Mathematics. This implies that qualitative researchers study things in their natural settings, trying to form sense of or taken phenomena in terms of the meanings learnt and observed by pupil from surroundings. Therefore, it had been tried to check the interpretation of their world of the analysis participants. Then research has taken path that was generated by analysis of participants. Therefore there exist multiple interpretations of social realities from the views of participants. Qualitative analysis could be a means that can help in exploring and understanding of the means of people or cluster ascribed to an individual's difficulties [8]. It's a procedural set up adopted by a researcher to answer analysis queries and bring home the medal of the aims of analysis. It's versatile, emergent, unvaried and dynamic. Qualitative analysis could be a located activity that locates the observer within the world. It consists of set of interpretative materials practices that build the globe visible and remodel the globe. They flip the globe into a series of representations, together with field notes, interviews, conversations, pictures, recordings and memos to the self. At this level, qualitative analysis involves interpretative, naturalist approach to the studies. The qualitative analysis begins with assumptions, a broad-view, the potential use of theoretical lenses, and therefore the study of analysis issues inquiring into the means of people or teams ascribed to social or human issues. Whereas conducting the qualitative analysis the researchers use for rising the qualitative approach to inquiry-the gathering information of knowledge during a natural setting sensitive to the folks and places beneath study and data analysis that's inductive and establish-

es patterns or themes. There is completely a different characteristic of qualitative analysis.

The purpose of qualitative inquiry is to collect non-numerical information to assist the study for or develop a theory concerning relationship. During this study, [4] methodology concerning qualitative analysis is that qualitative analysis offers opportunities for conducting test and descriptive analysis that uses context and setting to look for a deeper understanding of the persons being researched. The students in qualitative analysis are evaluated by the activities done by them, as grouping and analyzing information, elaborating the theories, focusing and focalization the analysis question, threats of learning to go along at the same time Qualitative analysis depends totally on the gathering of primary information. During this context, qualitative analysis could be a field of inquiry that cross-cuts disciplines and issues [8]. Qualitative analysis is directed towards analyzing concrete cases in their temporal native significantly ranging from people's expression and activities in their local context [9]. The location and sample is designated purposively for the chosen district and Mathematics students. Throughout the study, it's not disclosed the participant's real name following the analysis ethics. The study here inspired from the above research tries to know the factors which affect the students most. For the above said factors which are hindrances, in mathematics learning by students. Research has been conducted on students of Madhya Pradesh Districts and a review is inferred for the identification and causes of the learning difficulties by the students.

Student's connected issue is one that includes the necessary aspects of high fail rate in Mathematics also it plays very important role in a teaching learning method. While not students interest within the teaching learning activities there's no risk to realize information in subject material. Student's action depends on their want, interest; practices and seriousness in subject material. Student connected factors embrace Mathematics anxiety, previous information of scholars and student's effort in learning Mathematics.

The collected knowledge were analyzed and understood on the flowing factors:

Prior information of scholars is another side of student related factors which implies the previous information of the scholars towards mathematical contents. The fundamental information of Mathematics in lower secondary level is one of the key factors that determine smart performance of the scholars or not at all good performance of students. This additionally verifies student's performance within the study. Mathematical pre information is that the infrastructure likewise all spherical development of scholars within the Mathematics sectors. Those students who have got lack of extra previous information

didn't wish to find out and are not keen to get successful within the higher level. It's accountable for students who fail in Mathematics and all this was observed at secondary level.

Students feel Mathematics is a new and tough subject. It's not associated with the scholars behavior and life and also it's not relevant with the vicinity of Madhya Pradesh's four districts namely Bhopal, Sagar, Betul and Ujjain there student face language downside specially the scholars background is extremely vital stage for survivable within the society. A plenty of study time they outlay to say the footing method. it's being grate downside. Like within the study time they are going to gather useful and valuable plants and grazing the Shrubs within the forest to urge knowledge of quantity of cash. Basically, students aren't serious in basic rules and properties of Mathematics. Therefore students did not get interested as regarded, Albert Bandore's social learning theory emphasizes the importance of observant and modeling the behaviors, attitudes, and emotional reactions of others. [2] States: "Learning would be passing punishing, to not mention venturous, if parents had to believe exclusively on the consequences of their own actions to tell them what to try to do". Fortuitously, most human behavior is learned observationally through modeling: from being observant of others, one forms a plan of however new behaviors are performed, and on later occasions this coded data is a guide for action. "Social learning theory explains human behavior in terms of continuous reciprocal interaction between psychological features, behavioral, environmental influences. The element processes underlying experimental learning and paying full attention, as well as sculptured events (distinctiveness, affection valence, complexity, prevalence, useful value) and observer characteristics (sensory capacities, arousal level, sensory activity set, past reinforcement), retention, as well as symbolic un-distinguishable writing, psychological feature organization, symbolic rehearsal, motor rehearsal), motor replica, as well as physical capabilities, self-observation of replica, accuracy of feedback, and motivation, as well as external, vicarious and self-reinforcement. As a result of this encompassed attention, memory and motivation, social learning theory spans each psychological feature and behavioral frameworks. Scope/Application: social learning theory has been applied extensively to the understanding of aggression [2] and psychological disorders, notably within the context of behavior therapy [2]. Conjointly the theoretical foundation for the technique of behavior modeling that is wide utilized in coaching programs. In recent years, Bandura has centered his work on the idea of self-efficacy in an exceedingly style of contexts. Example: the foremost common (and pervasive) samples of social learning things are commercials. Commercials counsel that using drinkable cold-drink or employing a particular hair shampoo can be of popular standard and win the admiration of engaging folks. Similarly, relying upon the ele-

ment processes concerned (such as attention or motivation), we tend to change the behavior primitively adopted within the industrial and purchase the product being publicized. Hence, the role of previous information of Mathematics is similarly extremely necessary side for elementary school students who pass in Mathematics in SLC examination.

Mathematics anxiety could be a one in every of the necessary facet of student's connected factors in learning Mathematics. Mathematics anxiety could be a negative feeling to Mathematics learning method. Once examining pupil issues in Mathematics anxiety as a sense of tension, apprehension, or concern that interfere the Mathematics performance. Mathematics anxiety refers to forgetting of concepts and lack of confidence in material. It affects the Students' Mathematics learning method. Additionally it affects the topics pass rate in Mathematics in SLC. Mathematics anxiety directly affects the scholars to find out well. Lim, Chip, found out a stress that students' anxiety of Mathematics is accountable for students who are not able to perform well in Mathematics. Equally they argue that negative rationalization concerning Mathematics from the teacher's side and different person created fruition and anxiety and prepared to find out purposeful manner.

Parents' support is the most important and vital factors which contribute in learning Mathematics. Parents that play an unavoidable role to their child's learning and it are useful for improving their liking and attitude in mathematics. Also students' accomplishment and dynamical behaviour of students depends on parents' support and it plays an important role in the tyro stages of learning. Folks those who support for his or her child's learning will observe accomplishment in education. Faculty will be sees as a form of positive partnership with folks by involving higher cognitive process that affected students pass in mathematics. Most of the rural population still found to be illiterate. They can't be able to support children in understanding and learning Mathematics. The youngsters of these families aren't interested to find out Mathematics reason being lack of family support. Consequently, students didn't pass in Mathematics in secondary level. So, students pass in Mathematics is low Ghimire 2011 argued that family support play important role in education. Students liking and interests in a subject are determined by their family support. In contrast to above study and to its regard Ausuble argue that students learning accomplishment depend on their attention, liking and interest. The research worker terminated the condition of students taking support from their families. They have shown a negative and lower achievement in Mathematics. Therefore it is taken as one of the major reason for low students passing rate Mathematics in class level.

An environmental issue is incredibly necessary side of scholars high fail rate Mathematics. During this study, environment connected factors refer teaching learning setting and residential setting. Teaching learning environment indicated that the setting inside school-

room. Dwellings setting indicate the family setting. These completely different environmental factors verify the students' activities in learning. Additionally learning accomplishment of Students, scholars, guides and their families' setting and surroundings/environment setting in this section, the researcher emphasize on setting all the factors that embrace teaching learning setting and residential environment of student that have an effect on student's success in Mathematics.

An environmental issue is extremely necessary factors of students high fail rate mathematics. During this study, environment connected factors refer teaching learning environment and residential setting. Teaching learning environment indicated that the setting within classroom. Home setting indicates family setting. These totally different environmental factors confirm the students' activities in learning. Additionally learning accomplishment of scholars and guides their families' setting and their faculty setting in this section of environment, the research worker emphasize on environmental factors such as teaching learning setting and residential environment of student that have an effect on students pass in mathematics. Teacher failed to address child requirements, needs and interest in the school-room. There's no student friendly surroundings in the schoolroom i.e. classroom the schoolroom. Faculty has restricted sources. Larger Number of students, therefore the teacher cannot use students orientating teaching learning in schoolroom in spite of his caliber, his good teaching and explaining capability. School has been sure in ancient teaching ways. During this argument [1] researcher argues that students pass in Mathematics rely on teacher's attitude, teaching learning surroundings and physical structure of faculty. Those faculty failed to apply these items obviously students achievement obtaining a lower rate. But, Ausubel argued that learning can't be the only parameter to teach the scholars and make them ready for math. But this matter cannot be found in this study. So students pass in Mathematics at public secondary level is low. Therefore one reason for low students passes in mathematics in secondary level and learning surroundings.

Home setting is another necessary side of learning mathematics. House is one of the students' first School and mother id first teacher. All youngsters' education depends on their home environment and parents. Sensible home setting enhances students' achievement in Mathematics. When parents knowing nothing and are unaware about the importance of mathematical data in their life and they cannot force to be told Mathematics to their child. Students pass in Mathematics from all faculties depends on their home setting and that they learn everything from their family member characters and their society behaviours during these study oldsters don't seem to be aware in child education. On the idea of these things the research worker involved with students, teachers, Parents and Community.

Though economic background can be a harsh factor to judge but this is an important factor. The urban and rural contrast can also be an economic factor which can prove to be an economic hindrance to the math learning. It is one of the vital aspects of knowing the factor affecting learning of mathematics. Many researches have shown this as major factor in lagging behind of students in studies. Mostly in India, Children were trapped as child labours in order help their parents financially. In contrast rich people can afford home tutors in order to keep their child ahead of other students in class. Also in some schools children are not able to regularly attend school. So, this factor contributes in knowing the status of student in education.

Results:

The review has highlighted several factors and causes which lead to difficulty in learning by students. The main focus was of mathematics subject. After doing the review on certain factors the results can be interpreted as follows:

" Many psychological factors were there which resulted in learning difficulties of Mathematics; they are anxiety, adherence and fear of the subject.

" Lack of previous and elementary knowledge of math by the students in Mathematics.

" Lack of students liking the subject and hard work in acquiring math concepts.

" Negligence and unsupportiveness of the family resulted in lesser achievement of students in Mathematics.

" Students and children getting involved in child labour in order to help their parents and contribute to their family.

" Children who are encouraged and motivated by their family perform better in math.

" A vast contrast in rural and urban life and their environment setting pay an equivalent role in deciding achievement like other factors.

" Students with lack of motivation and counseling tend to perform low in mathematics.

Conclusion

There are many interconnected factors which result in difficulties by students in mathematics. They are referred to as mathematical learning difficulties. It is a topic of concern for researchers in knowing the factors which result in the difficulties. The difficulties of grasping the subject concept lies in the attitude of students, environmental, parents support their economic background and also teacher's attitude towards subject and students are some factors determining learning levels of students. The students liking and attitude towards math is one of the deciding factor in their inclination towards math. The more they will

take interest more they will learn. The teachers and parents attitude their support contributes in increasing learning levels. The parents who are more aware tend to encourage their child for education also they can help in judging the performance of teachers. The knowledge being imparted to students must be correct it also creates difficulties for students in mathematics. These barriers need to be eradicated with collaborative effort of parents, teachers and school. When conditions will improve consequently the learning difficulties will become weak and student will take interest in Math.

References:

- [1]. Affleck, J. Q., Madge, S., (1988). Integrated classroom versus resource model: Adams, A. and Academic viability and effectiveness. *Exceptional Lowenbraun, S. Children*, 54, 339 - 348.
- [2]. Ainscow, M. and Muncey, J. (1989). Meeting individual Needs in the primary school. London: David Fulton publishers.
- [3]. Acharya, B. R. (2017). Diversity in mathematics education, Kathmandu: Pinnacle publication Pvt. Ltd.
- [4]. Bandura, A. & Walters, R. (1963). "Social learning and personality development. New York: Holt Rinehart & Winston.
- [5]. Bandura, A. (1977). Social learning theory, New York: General learning press.
- [6]. Brewer, J. D. (2005). Understanding social research. In A. Bryman (Ed.), *Ethnography*. Philadelphia, USA: Open University Press.
- [7]. Carmel M. Diezmann, Melissa K. Stevenson, and K. Louise Mercer 2nd International STEM in Education Conference 2004 Mathematics Learning Difficulties: An Australasian Perspective
- [8]. Creswell, J. (2009). Research design, qualitative, quantitative, and mixed methods approach (3rd ed.). New Delhi: Sage Publication.
- [9]. Decker, S. N. and (1980). Cognitive abilities in families of reading disabled Defries, J. C. children. *Journal of Learning Disabilities*, 13, 517-522.
- [10]. Prasad, B. (1982). Relationship of constitutional factors to learning difficulties among primary school children. *Indian Educational Review*.
- [11]. Denzin, N. K., & Lincoln, Y.S. (2005). The hand book of qualitative research (2nd ed.). Thousand Oaks, CA: Sage. [9] Flick, U. (2009). An introduction to qualitative research. India: Sage.
- [12]. National Research Council, (1989). Everybody counts: A report to the nation on the future of mathematics education. Washington, D. C.: National Academy Press.
- [13]. Patton, M. Q. (1999). Qualitative evaluation and research methods. USA: SAGE.
- [14]. Vygotsky, L. (1978). Mind in society: The development of higher psychological

processes. Cambridge, MA: Harvard University Press.

DIMENSIONS AND PROCESS OF MOTIVATION

Pragati Choudhary
Research Scholar
Department of Management
Barkatullah University,
Bhopal

Dr. Pavan Mishra
Professor
Department of Management
Barkatullah University, Bhopal

Motivation was explained by many scholars as a process that administers choices. Physiological and psychological insufficiency activates behavior in the direction of goal (Bhattacharya, 2009). It is the unaware or wakeful recognition of unfulfilled needs that triggers process of motivation (Arnold et al. 1991).

Green (2000) suggested that motivation process go after specifically characterized steps which are required to be reviewed at times as a continuum and should be managed to ensure its appropriate restoration that helps maintain motivation among workers. Motivation inspires employees to work to generate finest outcomes. It remains a general term for needs, drives, wishes, desires and other forces of the same class (Shah and Shah, 2010).

Baron (1983) opined that motivation results in performance and if rewards are given to employees, performance can also reason motivation. Therefore it remains suggestive that in organization, high performers should be rewarded for retaining efficient workforce based on their productivity (Carragher et al. 2006).

Types of Motivation

Motivation can be broadly classified into two groups that include intrinsic and extrinsic. Intrinsic motivation refers to the impulse that comes from within whereas; in extrinsic motivation, impulses that drive someone to accomplish something come from outside source. In intrinsic motivation, an individual's performance is spontaneous in accordance with his belief system resulting in best possible outcomes. Further, motivation can be categorized in more specific classes described as under:

1. Achievement Motivation:-

Achievement motivation is the aspiration to achieve goals. An employee with this kind of motivation wants to complete his objectives and continue ahead towards success without

desiring any reward (Singh, 2011). Achievement motivation as a behavior is aimed at rising or representing high ability (Nicholls, 1984).

2. Competence Motivation:-

Competence motivation appears as a significant factor in professional success (Bales, 1984). In this kind of motivation, competence motivates a person towards developing mastery in particular skill and people take pride in performing specific tasks by their own experiences and creativity.

White (1959) coined a concept of effectance motivation. He defined effectance as a propensity to discover and affect one's environment. This was considered as precursor of competence motivation theory by scholars. He demonstrated that people have intrinsic motivation to fit into interactions with their physical and social settings. If this causes fruitful observable changes or success then one gets intrinsic rewards in the form of feelings of efficacy and contentment leading to further motivation to carry on effectance efforts.

3. Affiliation Motivation:-

Affiliation is a constructive, sometimes close sociable relationship (Zimbardo and Formica, 1963). Affiliation motivation is an instinct that compels someone to associate with people on social basis. Persons with this kind of motivation, function more efficiently provided that they are admired by others for their positive attitudes and supported.

Persons with this kind of motivation are successful performer in a team. This motivation is highly helpful where ample monetary input is not possible to be used in order to motivate employees especially low wage workers. Persons who have high desire for affiliation choose functioning in an environment where there is greater personal interaction. They opt to be liked by all; therefore they do not prove to be a successful leader.

In 1961, McClelland in his book "The Achieving Society" presented famous Three Needs Theory that demonstrated that, people have three motivating factors in order of their significance, of which one remains dominant motivational factor that drives our way of functioning despite gender, age and culture. This is an outcome of our experiences and cultural environment. Human motivation theory is also called Three Needs Theory and Learned Needs Theory. McClelland work contribution was highly influential in the field of organizational behavioral science and other business related issues (McClelland, 1961, 1965). This theory has its application in organizations that plan to improve work performance of their employees by assigning works that is suitable for their predominant needs (Smit et

al. 2007).

4. Power Motivation:

Persons with this kind of motivation are motivated by prestige, status, recognition, appealing arguments, contest and influencing others. Persons with power motivation have instinct to persuade others and change circumstances. They are able to impact their organization and sometime face any possible risk or threat in bringing about this. Such a person possibly follows a path of continued promotion sooner or later. They prefer to be placed into competitive and status oriented circumstances (McClelland and Burnham, 1976).

McClelland developed his hypothesis to incorporate two diverse power motivations involving socialized power and personal power. Former is articulated by portrayals of plans and concern for others whereas; latter is articulated by selfishness in which one tries to find power and opposes another to get it (Chusmir and Parker, 1984).

5. Attitude Motivation:

Attitude motivation is about thinking and feeling of people (Hockenbury and Hockenbury, 2011). Attitude motivation demonstrates self-possession and outlook. Employees who have negative attitudes can transmit the same onto their colleagues at work place and as a consequence there might be creation of workforce that shows less satisfaction in their work and feel that the quality of their performance is worthless. In this situation, managers are required to choose new approach to motivate their employees (Beck, 2005). Attitude motivation affects preference of action and reacts to challenges, incentives, and rewards.

6. Incentive Motivation:

A person with incentive motivation mostly prefers to function when it is positively perceived and avoid it if negatively perceived resulting in negative reinforcement (Franzoi, 2011). Incentive motivation theory started emerging during 1940s. Many behavioral psychologists involving distinguished B.F. Skinner support the Incentive Theory of Motivation. Rewards or prizes motivate people to work more and harder. Workers of unorganized sector mostly get motivated when they are offered extra money (Bernstein, 2011). In other words, workers are pulled into action in presence of outside incentives.

7. Fear Motivation:

Fear Motivation refers to a kind of motivation that persuades an individual to act against his will. The theory that explains fear motivation is also known as Protection Motivation Theory which was developed to explain fear appeals. This demonstrates that there are four factors on the basis of which people defend themselves. These factors include severity of a threatening, likelihood of the occurrence, efficacy of the suggested defensive behavior;

and perceived self efficacy (Rogers, 1975). Protection motivation theory was propounded by R.W. Rogers in 1975. In 1983, he advanced his theory to a more general hypothesis of persuasive communication. This was originally based on writings of Richard Lazarus who spent much of his time understanding how people behave and cope with stressful circumstances (Monat and Lazarus, 1991).

Theory on Motivation

There are two popular theories on motivation process among workers involving Maslow's hierarchy of needs theory and Herzberg's two-factor theory. Maslow's theory based on levels of priorities was most widely accepted model on which present work is based whereas; Herzberg's model is based on job factors giving either satisfaction or dissatisfaction. Herzberg's model is beyond the scope of present work hence; more and more emphasis is being placed on Maslow's model only.

REFERENCES-

- Arnold, J; Robertson, I.T. and Cooper. C.L. (1991): Work Psychology: Understanding human behaviour in the workplace. London: Pitman.
- Bales, J. (1984): Mastery, hard work top competitiveness in predict. APA Monitor, p.12.
- Baron, R.A. (1983): Behaviour in organizations. New York: Allyn & Bacon, Inc.
- Bartley, W.J. (1977): Motivation and Leadership in Your Business. Journal of Arboriculture, 65-68. (Presented at the annual conference of The international Society of Arboriculture in St. Louis, Missouri in August 1976.)
- Beck, R.C. (2005): Motivation:Theories & Principles, Fourth Edition. Published by Pearson Education (Singapore) Rte. Ltd., Indian Branch, 482 F.I.E. Patparganj, Delhi.
- Bernstein, D. A. (2011): Essentials of psychology. Belmont, CA: Wadsworth.
- Bhattacharyya, D.K. (2009). Human Resource Research Methods. 2nd ed. New Delhi: Excel Books.
- Carraher, R; Gibson, A. and Buckley, R (2006): Compensation in the Baltic and the USA. Baltic Journal of Management, 1, 7-23.
- Franzoi, S. L. (2011): Psychology: A discovery experience. Mason, OH: South- Western, Cengage Learning.
- Green, T. (2000): Motivation Management: fuelling performance by discovering what people believe about themselves and their organizations. Palo Alto: Davies-Black Publishing.
- Hockenbury, D. H. and Hockenbury, S. E. (2011): Psychology. New York: Worth Publishers.

- Maslow, A.H. (1943): A theory of human motivation. *Psychological Review*, 50(4): 370-396.
- McClelland, D.C. and Burnham, D.H. (1976). Power is the great motivator. *Harvard Business Review*, 54(2), 100-110.
- McClelland, D.C. (1961): *The Achieving Society*. Publisher: Princeton, N.J., Van Nostrand.
- McClelland, D.C. (1965): Toward a theory of motive acquisition. *American Psychologist*, 20, 321-333.
- McFarland, D.E. (1974): *Management: Principles and Practices*. Macmillan/McGraw-Hill School Division.
- Monat, A, and Lazarus, R. (1991): *Stress and coping: an anthology*. New York: Columbia University Press.
- Nicholls, J. G. (1984): Achievement motivation: Conceptions of ability, subjective experience, task choice, and performance. *Psychological Review*, 91, 328-346.
- Rogers, R. W. (1975). A protection motivation theory of fear appeals and attitude change. *Journal of Psychology*, 91: 93-114.
- Shah, K. and Shah, P.J. (2010): Motivation. Retrieved from: <http://scribd.com/doc/6564596/motivation>
- Singh, K. (2011): Study of Achievement Motivation in Relation to Academic Achievement of Students. *International Journal of Educational Planning & Administration*. 1(2): 161-171.
- Singh, S.K. and Tiwari, V. (2011): Relationship between Motivation and Job Satisfaction of the White Collar Employees: A Case Study. *Management Insight*, 7(2): 32-39.
- Smit, P.J; Cronje, G.J.; Brevis, T; Vrba, M.J. (2007): *Management Principles: A Contemporary Edition for Africa*. (4th ed.), Cape Town: Juta and Co. Ltd.
- White, R. (1959): Motivational reconsidered: The concept of competence. *Psychological Review*, 66, 297-333.
- Zimbardo, P. and Formica, R. (1963): Emotional Comparison and Self-Esteem as Determinants of Affiliation. *Journal of Personality*, 31(2): 142 -162.

पंचायती राज में स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण और विकास

धनंजय बर्लिंगे

शोध छात्र समाज शास्त्र विभाग

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल

परिचय

पंचायत राज अधिनियम 2006 में महिलाएं के लिए 50: आरक्षण तथा पंचायत चुनाव में लगभग 65: महिला प्रतिनिधियों की जीत से जो पंचायतों का स्वरूप बदला है, उसकी पृष्ठभूमि में अब मात्र यह बताना काफी नहीं होगा कि महिलाओं के सशक्तीकरण में पंचायतों की भूमिका क्या है, बल्कि अब खुद पंचायतों के सशक्तीकरण में महिलाओं की भूमिका क्या होने जा रही है— यह देखना भी बहुत रोचक होगा।

पंचायतों का यह नया एवं बदला हुआ स्वरूप जिला प्रशासन एवं राज्य शासन के लिए भी एक नई चुनौती है और एक नया अवसर भी। चुनौती इसलिए कि प्रशासन को किसी महिला बहुल लोक-संस्था के साथ कार्य करने का कोई अनुभव नहीं। और, अवसर इसलिए कि अब पंचायतों को प्रशासनोन्मुखी से लोकोन्मुखी बनाने में राज्य शासन को बहुत अधिक चेष्टा नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि, महिलाएं अपनी हर भूमिका को परिवार से जोड़कर देखना कभी नहीं भूलतीं।

भारत सरकार ने ग्राम स्तर पर महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में एक असाधारण कदम उठाते हुए पंचायतों में महिलाओं की आरक्षित संख्या 33 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

देश भर में पंचायतों में महिला आरक्षण 50 प्रतिशत करने के लिए सरकार को संविधान के अनुच्छेद 243 में संशोधन करना होगा।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कैबिनेट की गुरुवार को बैठक हुई जिसमें संविधान के अनुच्छेद 243 (डी) में संशोधन करने के लिए एक विधेयक लाने का फैसला भी किया गया।

देश के पाँच राज्यों में पहले से ही पंचायतों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू किया गया है। सूचना और प्रसारण मंत्री अंबिको सोनी ने पत्रकारों को बताया, यह एक असाधारण फैसला है।^१

उन्होंने कहा कि पंचायती राज मंत्रालय पंचायतों में महिलाओं का आरक्षण बढ़ाने के इस फैसले को प्रभावी रूप देने के लिए संसद के आगामी सत्र में विधेयक लाने की योजना बना रहा है। पंचायतों में महिलाओं के लिए बढ़ा हुआ आरक्षण सीधे तौर पर निर्वाचित सीटों, पंचायत चौयरमैन के पदों और अनुसूचित जाति,

जनजाति और आदिवासियों के लिए आरक्षित सीटों पर लागू होगा.

पंचायत की शुरुआत एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में ही हुई थी। अतः इसके सारे कार्यकलापों की कसौटी एवं मापदंड का आधार यह है कि यह सामाजिक रूप से कितनी प्रासंगिक है? इसलिए यदि यह कहा जाए कि पंचायत की सारी भूमिकाएं सामाजिक भूमिकाएं हैं तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

फिर भी, वास्तव में केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा संपोषित योजनाओं के क्रियान्वयन में पंचायतें इतनी उलझ गयीं हैं कि उनकी सामाजिक भूमिकाओं की अलग में चर्चा करना जरूरी हो गया है।

पंचायत की सामाजिक भूमिकाएं मूलतः पंचायत के क्षेत्र में अवस्थित मानवीय पूजा को संपोषित करते हुए उस क्षेत्र के सामाजिक जीवन को स्वस्थ एवं स्वच्छ बनाने से सम्बन्धित हैं। स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा, तथा महिला एवं बाल कल्याण दृष्टि से चार ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें पंचायत को प्रभावी पहल लेनी है। इन चारो क्षेत्रों में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संपोषित योजनाओं के अलावा यूनिसेफ ने भी व्यापक स्तर हस्तक्षेप किया है। इन योजनाओं/स्कीमों की सफलता भी बहुत कुछ पंचायतों पर ही निर्भर करती है। पंचायतों को इसके लिए पर्याप्त सहयोग-समर्थन देना जरूरी है। ऐसा करने के लिए पंचायतें अधिनियम द्वारा अधिकृत भी हैं।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत में पंचायतों की परिकल्पना नई नहीं है, बल्कि यह प्राचीनकाल से ही हमारे समाज के ताने-बाने का अटूट हिस्सा रही है। देश के ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं से जो सहयोग प्राप्त हो रहा है, वह अद्वितीय है। पांच व्यक्तियों की सभा अर्थात् पंचायत के साथ हमारी प्राचीन संस्कृति जुड़ी हुई है। पंच परमेश्वर यानी पांचों पंच जब एक साथ कोई निर्णय देते थे, तो वह परमेश्वर की आवाज मानी जाती थी। भारतीय समाज में पंच परमेश्वर केवल स्थानीय स्तर के प्रशासनिक कार्यों तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि आपसी विवादों को हल करने, स्थानीय विकास गतिविधियों को आगे बढ़ाने, स्थानीय संस्कृति के संरक्षण और सामुदायिक सेवाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वास्तव में पंचायत उस सभा का नाम है, जहां पंच इकट्ठा होते हों, स्थानीय विकास की योजनाएं तैयार करते हों, जनकल्याणकारी और सामुदायिक विषयों पर विचार-विमर्श करते हों और इस संबंध में स्थानीय जन भावनाओं के अनुरूप निर्णय लेते हों।

ग्राम सभा स्तर पर

स्वयं सहायता समूहों को ग्राम सभा की बैठक में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने को प्रेरित एवं उत्साहित का सकती है।

ग्राम सभा द्वारा गठित निगरानी समितियों में महिलाओं को भागीदारी बढ़ाई जा सकती है।

ग्राम सभा में कुछ मूलभूत प्रश्न उठाकर, जैसे, गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों का क्रमवार चयन, सड़क निर्माण योजना में स्थान का निर्धारण रोजगार योजना से जोड़कर स्थानीय स्तर पर निर्माण कार्य की परियोजना आदि में महिलाओं को प्राथमिकता दिलवा सकती हैं।

ग्राम पंचायत में महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी पहल आदि पर चर्चा चला सकती हैं और निर्णायक भूमिका अदा कर सकती हैं।

ग्राम पंचायत स्तर पर—

स्थानीय विकास की कार्य योजनाओं का निर्माण करने तथा उनमें महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के उपाय कर सकती है।

महिला शौचालय के निर्माण एवं सामान्य स्वच्छता सम्बन्धी प्रयासों में तेजी लाई जा सकती है। सभी बच्चों को स्कूल भेजने का प्रयास सफलीभूत हो सकता है।

सामाजिक— सामुदायिक कार्यों में स्त्री—पुरुष समानता के मूल्यों को स्थापित करने में मदद मिल सकती है।

ग्राम कचहरी स्तर पर—

अधिक से अधिक मामलों का सौहार्दपूर्ण निपटारा करवाने में मदद कर सकती है।

महिलाओं की सखी—सहेली टोली बनाकर सामुदायिक सौहार्द बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।

महिलाओं की निगरानी समिति बनाकर विकास कार्यों के अवरोधों को पहचान कर उन्हें दूर करने की पहल कर सकती हैं।

समितियों के स्तर पर—

ग्राम पंचायतों के परिवार के रूप में सामाजिक शांति समितियां बनाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण सृजित कर सकती हैं।

ग्राम पंचायतों को अपना लेखा—जोखा, कागज—पत्र ठीक ढंग से रखने में मदद कर सकती है।

ग्राम पंचायतों की आपदा प्रबंधन सम्बन्धी योजनाओं को स्वयं हाथ में लेकर आवश्यक प्रबंध करने के लिए सम्बन्धित व्यक्तियों/ विभागों पर दबाव डाल सकती हैं।

स्वजल धारा

इस कार्यक्रम के तहत ग्रामवासियों की पूर्ण सहभागिता एवं जवाबदेही के आधार पर पेयजल योजना के चयन, निर्माण एवं क्रियान्वयन का प्रावधान किया गया है। इसके तहत नीचे दिए विकल्पों में से कोई हबी योजना पंचायतों के माध्यम से क्रियान्वित करायी जा सकती है—

- गाँव में उपलब्ध पेयजल के साधनों को सुदृढ़/ पुनर्गठित करना
- वर्तमान में चल रही पेयजल योजनाओं को और उन्नत करना
- नई पेयजल योजनाओं का निर्माण करना
- स्वजलधारा के अंतर्गत योजनाओं के निर्माण के लिए कुछ शर्तें इस प्रकार हैं—
पेयजल योजना के चयन, निर्माण एवं रखरखाव में ग्रामवासियों की पूरी भागीदारी एवं जबाबदेही होनी चाहिए। (ये सभी काम ग्रामसभा की बैठक में कराए जा सकते हैं)
- योजना में कुल लागत का दस से बीस प्रतिशत अंशदान लाभान्वित परिवारों द्वारा किया जाना चाहिए। (इस अंशदान में वास्तु/मजूदरी/भूमि आदि भी शामिल है) यह निर्णय भी ग्रामसभा की बैठक में लिया जा सकता है। इस योजना के माध्यम से न केवल पुरानी पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है बल्कि नई पेयजल व्यवस्था योजनाबद्ध तरीके से खड़ी की जा सकती अहि।

स्वास्थ्य

निरोधात्मक कार्यों में बच्चों का टीकाकरण कार्ड बनवाकर नियमित टीका लगवाने से लेकर आयोडीन नमक का नियमित सेवन तक सम्मिलित है। ग्राम पंचायत आम जन, विशेषकर महिलाओं और बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकती है। यह उनका अधिकार है। वैसे तो मातृ एवं बाल स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवायें प्रसव पूर्व देखभाल से सही शुरू हो जाती हैं जिसके अंतर्गत गरीबी के रेखा के नीचे आने वाले माताओं को प्रसव के लिए अस्पताल पहुंचाने के लिए वाहन की व्यवस्था तथा प्रसव एवं प्रसव पश्चात् दवाएं इत्यादि आवश्यक वस्तु खरीदने के लिए आर्थिक मदद देने का प्रावधान से ही शुरू होते हैं जिनमें विशेषकर, ग्रामीण क्षेत्रों में, पंचायतों की भूमिका कई तरह से आवश्यक हो जाती है।

हमारे देश में हर साल लाखों बच्चे विनाशकारी रोगों का शिकार बनते हैं। ये रोग तो जानलेवा होते हैं यह फिर जीवनभर के लिए हानिकारक प्रभाव छोड़ जाते हैं। टी.बी./, पोलियो, डिप्थीरिया, कुकर खांसी, टेटनस, खसरा ऐसे छः जानलेवा बीमारियाँ हैं जो अंधेपन, विकलांगता या मृत्यु का कारण बन सकती हैं। किन्तु इन सभी रोगों से नियमित टीकाकरण द्वारा बच्चों को बचाया जा सकता है। पोलियो, बी.सी.जी., डी.पी.टी., मीजिल्स, विटामिन 'ए' के टीके उपलब्ध हैं जिनसे उपरोक्त घातक बीमारियों से लगभग निश्चित बचाव हो जाता है। इन सभी टीकों की बँधी खुराकें हैं जिन्हें निश्चित समय के अन्तराल में दिया जाना होता है। पोलियो उन्मूलन के लिए यूनिसेफ द्वारा अन्य राज्यों के साथ बिहार में सघन अभियान चलाया जा रहा है। इसमें सरकार तथा अन्य संस्थाओं के साथ-साथ समुदाय का भी भरपूर सहयोग लिया जा रहा है। पंचायतों की इसमें अहम भूमिका है।

जन्म-मृत्यु का पंजीकरण

संरक्षणात्मक कार्यों के अंतर्गत सबसे पहला काम है— जन्म-मृत्यु का पंजीकरण। जन्म और मृत्यु रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1969 पर आधारित जन्म और मृत्यु रजिस्ट्रीकरण नियमावली बिहार राज्य में अप्रैल 1970 से लागू की गई है और जिसे बिहार जन्म और मृत्यु रजिस्ट्रीकरण नियमावली, 1977 से प्रतिस्थापित करते हुए जनवरी, 2000 प्रभावी बनाया गया है। इस अधिनियम में निहित प्रावधान के अंतर्गत राज्य में होने वाली प्रत्येक जन्म एवं मृत्यु की घटना का पंजीकरण अनिवार्य अहि। यह कानून आवश्यक है तथा घटना के घटित होने के 21 दिनों तक निःशुल्क किया जाता है। समय पर पंजीयन करवाने से भविष्य में होने वाले कई परेशानियों एवं झंझटों से बचा जा सकता अहि।

जन्म के पंजीकरण के उपरांत जो प्रमाण-पत्र दिया जाता है वह जन्म की तारीख एवं स्थान का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। यह दस्तावेज स्कूल में प्रवेश के समय, राशन कार्ड में नाम, दर्ज करवाने हेतु, ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने हेतु, विदेश यात्राओं के पासपोर्ट बनवाने के लिए, मताधिकार प्राप्त करने के लिए, वृद्धावस्था पेंशन प्राप्त करने के लिए लिए, बालिका समृद्धि योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए, बाचों के स्वास्थ्य संबंधी रिकार्ड एवं टीकाकरण के लिए तथा देश की वर्तमान जनसंख्या की स्थिति ज्ञात करने के लिए बहुत जरूरी है।

जन्म की तरह मृत्यु का पंजीयन भी अति आवश्यक है। मृत्यु के पंजीयन के उपरांत जो प्रमाण-पत्र निर्गत किया जाता है वह मृत्यु की तारीख का एक प्रामाणिक दस्तावेज होता है। इसका उपयोग पैतृक सम्पत्ति के

दावे के निराकरण में, कोर्ट कचहरी में मृत्यु के साक्ष्य के रूप में, जीवन बीमा, बैंक खातों के लिए, दुर्घटना आदि में मृत्यु होने की स्थिति में मुआवजा की प्राप्ति में तथा मृत्यु के कारणों का पता लगाकर उसके अनुरूप उपचार हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए किया जा सकता है।

महिला स्वाधार योजना

केंद्र सरकार द्वारा सम्पोषित इस योजना के अंतर्गत निराश्रित, परित्यक्ता, विधवा एवं प्रवासी महिलाओं को प्राथमिकता के आधार पर शामिल किया गया है। इसके अंतर्गत सामाजिक एवं आर्थिक सहयोग की व्यवस्था इस प्रकार है—

1. पुनर्वास के लिए जमीन क्रय हेतु वित्तीय सहायता
2. भवन निर्माण हेतु सहायता
3. भोजन, आश्रय, वस्त्र आदि के लिए सहायता

समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम

यह कार्यक्रम जन्म से लेकर 6 वर्ष तक की उम्र के बच्चों, गर्भवती/शिशुवती महिलाओं और किशोरी बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है।

राज राजेश्वरी महिला कल्याण बीमा योजना

इस योजना के अंतर्गत 10 से 75 वर्ष के आयु वाली महिलाओं के बीमा का प्रावधान है। इसके तहत घरेलू गृहिणी छात्रायें, घरेलू श्रमिक एवं अकुशल महिला मजदूरों को लाभाविन्त करना है। इसके तहत व्यक्तिगत एवं समूह स्तर पर महिलाएं बीमा का लाभ उठा सकती हैं। महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों को इसका लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

भाग्यश्री बाल कल्याण पॉलिसी

यह पॉलिसी 18 वर्ष की बालिकाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना के रूप में लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत माता/पिता की मृत्यु के पश्चात बालिका को 17 वर्ष की उम्र तक एक निर्धारित राशि देने की व्यवस्था है।

एक वंचित वर्ग के रूप में महिलाओं के लिए पंचायत निम्नलिखित के सन्दर्भ में पहल कर सकती है—

- शिक्षा की व्यवस्था
- स्वास्थ्य की देख-रेख
- जीविकोपार्जन के समान-अवसर
- स्वयं सहायता समूह निर्माण एवं सशक्तिकरण
- रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत जीविकोपार्जन के लिए वैसी महिलाएं जिनके पति बाहर गये होने, उनके लिए प्राथमिकता के आधार पर काम।
- निर्माण योजना के तहत काम करने के समान अवसर

वैसे भी महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए समय-समय पर केंद्र सरकार की ओर से अबतक पन्द्रह अधि. नियम लागू किये गये हैं। इनकी छाया में महिलाएं मुक्त होकर अपने उत्तरदायित्वों को निभा सकती हैं।

आवश्यकता है तो उनके साहस एवं व्यक्तिगत पहल की, जिसके लिए उन्हें सशक्त तो किया जा सकता है पर कदम तो उन्हें ही उठाना पड़ेगा। वे पन्द्रह अधिनियम इस प्रकार हैं:

1. महिला घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम, २००५
2. हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, १८५६
3. हिन्दू विधवा पुनर्विवाह (निरसन), अधिनियम, १९८३
4. हिन्दू महिला सम्पत्ति अधिकार अधिनियम, १९३७
5. चिकित्सकीय गर्भ समापन, अधिनियम, १९८३
6. पूर्व गर्भधारण एवं पूर्व-प्रसव नैदानिक तकनीक (लिंग-चुनाव निषेध) अधिनियम, १९९४
7. राष्ट्रीय महिला आयोग, १९९०
8. मातृत्व लाभ अधिनियम, १९६१
9. मुस्लिम महिला (तलाक अधिकार संरक्षण) अधिनियम, १९८६
10. मुस्लिम विवाह विघटन अधिनियम, १९३६
11. परिवार न्यायालय अधिनियम, १९८४
12. दहेज निषेध अधिनियम, १९६१
13. अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम, १९५६
14. महिला अशोभनीय प्रतिनिधित्व (निषेध, अधिनियम, १९८६
15. सती प्रथा (निवारण) अधिनियम, १९८७

पंचायत के स्तर पर भी इन अधिनियमों के विषय में समुचित जानकारी महिलाओं को मिलनी चाहिए। इसके लिए भी पंचायत को जरूरी उपाय करने चाहिए।

संदर्भ—

पंचायती राज विभाग, बिहार सरकार

<http://wcd-nic-in.hi.womendevelopment>

<https://www-bbc.com.hindi.india.2009.08.090827&women&panchayat&mk>

<http://www-sandarbha-com>

देश के सामाजिक आर्थिक विकास के लिये, ग्रामीण जनता में, जागरूकता उत्तपन करने हेतु महिलाओं का योगदान

गीता सिंह

शोधार्थी समाज शास्त्र विभाग,

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

महिलाओं का सामाजिक/आर्थिक विकास और ग्रामीण जनता के बीच जागरूकता उत्पन्न करना समाज के उत्थान में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह भी सर्व विदित है कि ग्रामीण महिलाएं किसी काम के लिए आगे आने के लिए संकोच करती हैं तथा व्यक्तिगत रूप से पहल करती हैं इस लिए उन्हें सामूहिक रूप से आगे बढ़ाकर सशक्त करने की आवश्यकता महसूस की जाती है।

अतरू संघ प्रदेश, दादरा एवं नगर हवेली शिशु विकास परियोजना विभाग ने प्रत्येक आंगणवाड़ी केन्द्रों के अन्तर्गत दूरवर्ती क्षेत्रों को समावेश करने के लिए महिला मण्डल बनाए गए हैं।

आज किसी भी समाज व देश के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है समाज व देश के विकास में महिलाओं की योगदान को अनदेखा करना समाज व देश हित में सही नहीं कहा जा सकता। आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं के द्वारा महिलाओं का समूह बनाकर सरकार की योजनाओं का जानकारी दे रहे हैं तथा समूह में रहकर कार्य करने में मदद कर रहे हैं जिससे महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक मजबूती मिल रहा है और जिससे महिलाये विकास कर रही हैं। इस शोध में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं (आं.म.शि.) की योगदान का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिला के धमतरी विकासखण्ड के 100 महिलाओं का चयन कर उनके सामाजिक, आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं की योगदान का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि महिलाओं का सामाजिक आर्थिक विकास आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं के मेहनत, मार्गदर्शन व सहयोग से सरकार की योजनाओं का लाभ लेकर कर सामाजिक, आर्थिक विकास पहले के अपेक्षा की है। अतः अध्ययन में पाया गया कि आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं द्वारा अपने कार्यों का निर्वाहन कर सरकार की योजनाओं को महिलाओं तक पहुंचा कर महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

देश के आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान

देश के आर्थिक विकास में महिलाओं के योगदान पर पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने खुले तौर पर सही बात कही है। इस बात को खुले तौर पर स्वीकार करने में शायद देश का पुरुष प्रधान समाज आज भी हिचकता है।

लेकिन वास्तविक स्थिति यही है कि खेतों से लेकर कुटीर उद्योग तथा लघु उद्योगों में उत्पादन में महिलाएं नियमित और बेहतर तरीके से योगदान दे रही हैं।

देश की खेती की अगर बात करें तो खेतों से अगर हम महिलाओं की भूमिका को अलग कर दें तो आधे से अधिक खेतों में अनाज का उत्पादन ही नहीं हो पायेगी। इसके अलावा महिला और शिशु स्वास्थ्य के साथ साथ दूर दराज के इलाकों में बीमार लोगों के ईलाज और प्रसव के मामले में भी सिर्फ और सिर्फ महिलाएं ही सार्थक भूमिका अदा कर रही हैं। देश और खासकर झारखंड में शिशु मृत्युदर कम करने के मामले में भी दरअसल सारा श्रेय महिलाओं को ही जाता है।

देश के प्रधानमंत्री ने महिलाओं की तारीफ की

इसलिए जब प्रधानमंत्री इस आधी आबादी की सराहना करते हैं तो दरअसल वह देश के आर्थिक विकास की सबसे बड़ी सामाजिक ताकत को ही उत्प्रेरित करने का काम करते हैं। श्री मोदी ने गुरुवार को महिला स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों से ऐप के जरिये संवाद में कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि आज देश भर की एक करोड़ से ज्यादा महिलाओं से संवाद करने का मौका मिला है। महिला सशक्तीकरण पर जोर देते हुए उन्होंने कहा है कि खेती हो, डेयरी उद्योग हो या कोई अन्य क्षेत्र महिलाएं अपने हुनर से सफलता हासिल करने में पीछे नहीं हैं। श्री मोदी ने महिलाओं को स्वयं की शक्तियों को, अपनी योग्यता और अपने हुनर को पहचानने का अवसर उपलब्ध कराने की बात कही है।

स्थानिक महिलाओं को शामिल करते हुए महिला मण्डल

1. महिला सरपंच / महिला पंचायत सदस्य – अध्यक्ष
2. आंगणवाडी कार्यकर – सदस्य सचिव
3. प्राथमिक स्कूल शिक्षिका – सदस्य
4. प्रशिक्षित दाई – सदस्य
5. सामाजिक कार्यकर – सदस्य
6. ग्राम सेविका – सदस्य

महिला मण्डल को अपने स्तर पर स्थानीय मामलों को शामिल करते हुए नियमित रूप से बैठक संचालित करने की आवश्यकता है महिलाओं को गाँवों में घटित होने वाले बाल-विवाह/पढाई छोड़ देना/बाल मजदूर / लड़कियों के मामलों आदि से संबंधित कुप्रथाओं के विरोध में आवाज उठाने के लिए एकजुट होना चाहिए महिलाओं को अपने अधिकारों से संबंधित सामान्य विषयों पर सम्मान दिया जाना चाहिए तथा उनके हित के लिए भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत शामिल करना चाहिए महिलाओं में बदलाव आने से समाज में निश्चित रूप से बदभाव आयेगा और हम विकास की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे विभाग इस संबंध में विशेषज्ञों से राय आमंत्रित करता है ताकि इन असुरक्षित ग्रामीण लोगों के हित, जो उन्हें मिलना चाहिए, उसके लिए विभाग कुछ कर पायेगा

देश के हर क्षेत्र में महिलाएं कर रही हैं काम

उन्होंने सही कहा है कि आज किसी भी क्षेत्र को देखें तो वहां महिलाएं बड़ी संख्या में काम करती हुईं नजर आयेंगी। देश के कृषि और डेयरी उद्योग की तो महिलाओं के योगदान के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा कि देश के ग्रामीण अंचलों, छोटे श्रमिकों के लिए स्वयं सहायता समूह बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह समूह एक तरह से गरीबों और खासकर महिलाओं की आर्थिक उन्नति का आधार बने हैं। श्री मोदी ने स्वयं सेवी समूहों की कार्यप्रणाली का उल्लेख करते हुए कहा कि यह समूह महिलाओं को जागरूक करने के साथ ही उन्हें आर्थिक और सामाजिक तौर पर मजबूत बनाने में भी अहम योगदान दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि दीनदयाल

अंत्योदय योजना और अन्य योजनाओं के तहत देश भर की ढाई लाख ग्राम पंचायतों में करोड़ों ग्रामीण गरीब परिवारों तक पहुंचने और उन्हें स्थायी आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। महिलाओं के सशक्तीकरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का उल्लेख करते हुए श्री मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने इस दिशा में कई कदम उठाये हैं। उनकी सरकार के चार साल के कार्यकाल में पहले की तुलना में चार गुना अधिक स्वयं सहायता समूह बने और इतनी ही अधिक महिलाओं को इससे जोड़ा गया है। छत्तीसगढ़ के दौरे का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, श्वहां मुझे ई रिक्शा चला रही महिलाओं के रिक्शा पर सवारी करने का अवसर मिला।

यह महिलाओं की आय का स्रोत बनने में तो मददगार हुआ ही, दुर्गम इलाकों में आवाजाही करना भी आसान हुआ। इस बयान का पूरे देश की आधी आबादी पर निश्चित तौर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। देश की महिलाओं ने खुद को स्वावलंबी बनाने की पहली की है सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हाल के दिनों में महिलाओं ने खुद को स्वावलंबी बनाने की कोशिशों के बीच अपने परिवार को भी एक मजबूत आर्थिक संबल प्रदान किया है। सरकार द्वारा चलाये गये उज्ज्वला योजना की निरंतर शिकायतों के बाद भी सच्चाई यह है कि रसोई के धुएं से मुक्त महिलाओं की उत्पादकता बढ़ी है। इस उत्पादकता वृद्धि का लाभ देश को प्रत्यक्ष और परोक्ष तौर पर मिला है। इसलिए अब सरकार चाहे किसी की भी रहे, महिलाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में और प्रयास करने की जरूरत है। जब हम महिला सशक्तीकरण की बात करते हैं तो हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि परिवार की महिला ही एकमात्र इकाई है, जो खुद के लिए कभी कुछ नहीं करती। उसकी सोच में सदैव पूरा परिवार शामिल होता है। इसलिए जब हम महिलाओं को आगे बढ़ाने की बात करते हैं तो दरअसल हम पूरे समाज को आगे बढ़ाने की सोच रहे होते हैं। इस स्थिति में अब बेहतर तो यही होगा कि संसद में लगातार बाधित होते महिला आरक्षण बिल को भी आगे बढ़ने का रास्ता मिले, जिससे उन्हें देश की राजनीति में भी अपनी सक्रिय भूमिका अदा करने तथा खुद को राजनीतिक तौर पर स्थापित करने का अवसर मिल पायेगा।

संदर्भ—

1. राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय वृ सर्वेक्षण वृ सामाजार्थिक सर्वेक्षणः डवेचप.दपब.पद. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2013.
2. ? "India Corruption Study – 2008" ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल. 2008. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2013.
3. भ्रष्ट देशों की सूची जारीः डॉयच वेला. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2013.
4. India Assessment – 2013"- साउथ एशिया इंटेलिजेंस रिव्यू. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2013.
- 5- <https://www.mygov-in.hi.group&http://www-mediaforrights-org.women&rights.hindi&articles.256>

CAPITAL STRUCTURE ANALYSIS OF RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED

Narayan Jamod
Assistant Professor,
Department of Commerce,
Barkatullah University,
Bhopal

Abstract

India is the world's third-largest producer of crude steel (up from eighth in 2003) and is expected to become the second-largest producer. The steel sector in India contributes nearly two per cent of the country's gross domestic product (GDP) and employs over 6,00,000 people. The growth in the Indian steel sector has been driven by domestic availability of raw materials such as iron ore and cost-effective labour. Consequently, the steel sector has been a major contributor to India's manufacturing output. The Indian steel industry is very modern with state-of-the-art steel mills. It has always strived for continuous modernisation and up-gradation of older plants and higher energy efficiency levels. Presently, India's crude steel capacity is around 126 Million Tonnes (MT) and Production of crude steel was 97.4 MT during 2016-17. Any Business enterprise viability eventually boils down to cost return trade off . Cost of fund is undoubtably, the most important determinants of the viability. This become more crucial in steel industries. Therefore, the present paper attempts to analyze the financing pattern of RINL .

Key words: Steel industry, capital structure, Debt Equity.

Introduction

Capital Structure refers to the amount of debt and/or equity employed by a firm to fund its operations and finance its assets. The structure is typically expressed as a debt-to-equity or debt-to-capital ratio.

Debt and equity capital are used to fund a business' operations, capital expenditures, acquisitions, and other investments. There are tradeoffs firms have to make when

they decide whether to raise debt or equity and managers will balance the two try and find the optimal capital structure.

Objectives of the study

1. To examine the capital structure policy and pattern of company.
2. To Give suggestions for improvements of capital structure of the company.

Methodology

The study is based on secondary data, which was derived from the published annual reports of RINL, which are collected from the registered office of RINL. In addition to published reports, other publications by RINL were also used. The information related to the transport industry is derived from various sources like articles, journals, periodicals, newspapers etc. The collected data was analyzed using relevant Statistical and Accounting Techniques.

Period of the study

The period 2011-2012 to 2015-2016 is selected for this study. This 05 year period was chosen in order to have a fairly long, cyclically well balanced period, for which reasonably homogeneous, reliable and up-to-date financial data would be available.

Review of Literature

A number of research studies have been carried out on different aspects of financial performance of different industries by the researchers, economists and academicians in India and abroad. Different authors have analyzed performance in different perspectives. A review of these analyses is important in order to develop an approach that can be employed in the context of the study of RINL. Dr. Sunita panicker (2013)² advocates that better performance and sustainability in operation is achieved with the help of Capital Structure. Though there are many factors which affects the performance of firms, capital structure plays a major role in determining sustained performance of a sector. So it's important to know the factors which contribute to the firm's capital structure. Amidu (2011)¹ stated that the factors to be considered whenever a capital structure decision is taken are: Capital Intensity, Tangibility, Profitability, firm Size, Non Debt Tax Shield based on Huang (2010)³ suggested that the company may need funds to finance its activities continuously. Every time the funds have to be procured, the financial manager weighs the pros and cons of various sources of finance and selects most advantageous sources keep-

ing in view the target capital structure: Thus the capital structure decision is a continuous one and has to be taken whenever a firm needs additional finance As stated by Zeitun, R. and Tian, G. (2008),⁹ a demand for raising funds generates a new financial structure since a decision has to be made as to the quantity mix has its implications on the share holders earning and risk, which in turn will affect the market the market value of the firm. Thus, the primary motive of a company in using different capital mix is to magnify the shareholders earnings and thereby market value of the firm. As stated by Jensen (2006),⁴ once a company has been formed and it has been in existence for some years, the financial manager then has to deal with the existing capital structure. According to James (2004)⁷ financial structure decisions is a significant managerial decision as it influences the shareholder's return and risk. Consequently the market value of the share is affected by the financial structure decision. Santimoy Patra (2002)⁶ stated that the search for optimum financial structure is like search for truth or wisdom. The financial structure of a firm is very important since it related to the ability of the firm to meet the needs of its stakeholders. The present study, therefore strives to bridge the gap by focusing attention on important aspects of financial management and accounting practices. Such a comprehensive study regarding this area is the need of the hour and present study has been undertaken with a view to fill this gap.

Profile of the Company

RINL, the corporate entity of Visakhapatnam Steel Plant is a Navaratna PSE under the Ministry of Steel. Visakhapatnam Steel Plant fondly called Vizag steel. It is the first shore based Integrated Steel Plant in the country and is known for its quality products delighting the customers. It is a market leader in long products and it caters to the needs of diverse Industrial sectors. It is the first Steel plant to be certified ISO 9001:2008 (presently2015), ISO 14001:2004 (presently2015), OHSAS 18001:2007 and ISO/IEC 27001:2013 Standards. It is also the first PSE to be certified ISO 50001:2011 - Energy Management Systems and has acquired CMMI Level 3 Certification for s/w development.

Analysis of Capital Structure Of RINL

The following capital structure Ratios analysis was carried out to analyze Capital structure of RINL. These Ratios are:

1. Debt equity ratio.

2. Proprietary ratio.
3. Solvency ratio.
4. Fixed asset to net worth ratio.
5. Current asset to net worth ratio.
6. Capital gearing ratio.
7. Fixed asset ratio.
8. Debt service ratio.
9. Operating profit ratio.
10. Financial leverage ratio

1. DEBT EQUITY RATIO

Table 1-Calculation of debt equity ratio

Rs(in crore)

Interpretation

The debt equity ratio in 2012 is .48, it increased to 0.80 in 2013, it slightly increased

.082 in 2014, then it increased to 1.29 in 2015, in 2016 it increased to 1.37.

2. Proprietary ratios

Table 2- STATEMENT OF PROPRIETARY RATIO

Rs(in crore)

Interpretation

The proprietary ratio in 2012 is 63, it decreased to 50 in 2013, it slightly decreased to 49 in 2014, then it decreased to 41 in 2015, in 2016 it decreased to 34.

3. SOLVENCY RATIO

Table 3- Statement of solvency ratio

Rs(in crore)

Interpretation

The solvency

ratio in 2012 is 0.30, it increased to 0.41 in 2013, it increased to 0.49 in 2014, then it decreased to 0.41 in 2015, in 2016 it again decreased to 0.34.

4. FIXED ASSET TO NET WORTH RATIO

Table 4 Statement of fixed asset to net worth ratio Rs(in crore)

--	--

Interpretation

The fixed asset to net worth in 2012 is 0.90, it increased to 1.10 in 2013, it increased to 1.25 in 2014, then it increased to 1.45 in 2015, in 2016 it again increased to 1.90.

5. CURRENT ASSET TO NET WORTH RATIO

Table 5-Statement of current asset to net worth ratio Rs (in crore)

--	--

Interpretations

The current asset to net worth ratio in 2012 is 0.62, it increased to 0.83 in 2013, it decreased to 0.69 in 2014, then it increased to 0.83 in 2015, in 2016 it again increased to 0.86.

CAPITAL GEARING RATIO**Table 6-Statement of capital gearing ratio****Rs(in crore)**

Interpretation

The capital gearing ratio in 2012 is 5.30, it decreased to 3.41 in 2013, it decreased to 3.24 in 2014, then it again decreased to 1.55 in 2015, in 2016 it again decreased to 1.49.

6. FIXED ASSET RATIO**Table 7-statements of fixed assets ratio****Rs(in crore)**

Interpretation

The fixed asset ratio in 2012 is 0.76, it increased to 0.85 in 2013, it increased to 0.95 in 2014, then it decreased to 0.88 in 2015, in 2016 it increased to 1.14.

7. DEBT SERVICE RATIO**Table 8-Statement of debt service ratio****Rs (in crore)**

Interpretation

The debt service ratio in 2012 is 6.97, it decreased to 2.47 in 2013, it slightly increased to 2.64 in 2014, then it decreased to 1.23 in 2015, in 2016 it increased to 3.17.

8. OPERATING PROFIT RATIO**Table 9-statement of operating profit****Rs (in crore)**

--	--	--

Interpretation

The operating profit ratio in 2012 is 22%, it slightly decreased to 21.9% in 2013, it increased to 24.6% in 2014, then it increased to 30.2% in 2015, in 2016 it decreased to 15.8%.

9. FINANCIAL LEVERAGE RATIO

Table 410-statement of financial leverage ratio

Rs(in crore)

Interpretation

The			

financial leverage ratio in 2012 is 1.167, it increased to 1.678 in 2013, it decreased to 1.607 in 2014, then it increased to 5.206 in 2015, in 2016 it decreased to 1.459.

FINDINGS

In this study I found that the capital structure is made by debt and equity. Sources of the debt are secured loans, unsecured loans, current asset and current liability. While the sources of equity are equity share capital, reserves and surplus ,etc.

1. It is revealed that table 4.1 consist of debt and equity mix of RINL. The debt capital has been increased from 2012 to 2016.
2. It is revealed the table shows the proportion of total assets of a company which are financed by proprietor's fund. Proprietary ratio is decreasing every year during the study period.
3. The fixed asset to net worth ratio is more than the ideal ratio which means a higher ratio says 100% means that there are no outside liabilities and all the funds

employed are those of shareholder. In such a case the return to shareholders would be lower rate of dividend and this is also a sign of over-capitalization.

4. In capital gearing ratio, the equity fund or net worth is more than the long term debt borrowing which means low gearing. If the capital gearing is low then rising of long term loans may be easy.

5. Company's fixed asset ratio table shows from the year 2012 to 2015 the value of ratio is less than 1 but in the year 2016 value of this ratio is 1.14 demonstrates that the company has bought some of its fixed assets with the help of short term funds. This depicts operational inefficiency.

SUGGESTIONS

According to the study on the capital structure analysis of RINL followings suggestions are:

1. In the year 2014, 2015 and 2016 company's debt equity ratio is more than 1. A value of higher than 1 means that more assets are financed by debt that these financed by money of shareholders company should maintain this ratio less than 1.
2. Average of proprietary ratio is less than 60% which means discomfort for creditors. It shows more dependence on external sources, a ratio can be seen as a threat and may increase unwillingness of creditors to external credit to the company. A company should mix and balance its external and internal sources in a way that none of them is too high in comparison to the other.
3. Company should maintain the fixed assets to net worth ratio less than 1.
4. Fixed asset ratio table shows 5 years average ratio is 0.91 which is more than ideal ratio .067 company should maintain this ideal ratio.
5. Operating profit ratio table shows that the operating profit is not optimal as per its efficiency so to increase the operating profit, sales must be increased.

REFERENCES:

1. Pandey I.M. (2006), "Financial Management", Vikash Publishing House, New Delhi
2. Kothari c.k.(2012) Research methodology, sahity bhawan publication, Agra
3. Ravindra P.S. (2014), An Analysis of financial and Capital Structure of oil

and gais industry of O.N.G.C. Videsh limited International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences, Vol.3 (2014)

4. <http://www.rinl.com>

GENETIC COMPONENT IN MENTAL RETARDATION

Kavita Singh,
Rimpa Manna,
CBS Dangi, Dinesh Parmar
Department of Biotechnology,
RKDF University,
Bhopal

All traits of an individual are products of heredity and environment interaction. Individuals with varied genotypes appear differently by exposure to the common environmental factors. Interactions of gene and environment can result in different disease phenotypes and intellectual abilities.

Intelligence was one of the first human traits to be the target of genetic research even before psychology emerged as a scientific field. The correlation between DNA sequence and behavioral differences such as intelligence is considered causal because DNA variations can lead to behavioral differences but behavioral differences do not change DNA sequences (Deary et al., 2006).

Mental Retardation and Poor Scholastic Performance

Poor scholastic performance may be the result of mental retardation which manifests under age 18. The "poor scholastic performance" is a broad term and defined differently by scholars. Okoye (1982) defined poor scholastic performance as one in which a student is not successful in attaining standard performance in a specified evaluation exercises involving a test, an examination or a set of constant assessment. In other words, this can also be defined as school achievement of a child remaining below the expected for his/her age, cognitive skills, and schooling (Siqueira Giannetti, 2011).

American Association on Mental Retardation (AAMR) and American

Psychiatric Association (APA) define mental retardation on the basis of certain formulations developed by them. This refers to extensive limitations in functioning characterized by radically sub-average intellectual level, existing concurrently with limitations in two or more of the following adaptive skill areas: communication ability, self-care, social skills, self-direction, community use, health and safety, leisure, home living and work (Luckasson et al. 1992).

Definition of Concepts

Defining mental retardation remains a challenge and a matter of controversy. Ever since people have been able to distinguish mental retardation from other forms of mental disability, a central theme of definitions has concerned the failure of mentally retarded persons to adapt adequately to their surroundings. Older definitions were couched in terms of adult behavior, and there was a tendency to avoid precise criteria for deciding in borderline instances.

Tredgold (1956) defined mental retardation as a state of incomplete mental development of such a kind and degree that the individual was incapable of adapting himself to the normal environment of his fellows in such a way as to maintain existence independently of supervision, control or external support.

Doll (1953) provided more specific definition. In addition to the element of social adaptation, he emphasized the emergence of handicap in childhood, its constitutional nature and its incurability. He considered some criteria generally considered essential to an adequate definition and concept. These involve social incompetence, mental sub-normality, developmentally arrested, obtained at maturity, constitutional origin and essentially incurable.

Many writers have attempted to specify quantitative standards for deciding mental subnormal level. The most widely used objective criterion of this sort has been the score obtained on a standardized test of intelligence such as the Stanford-Binet Intelligence Scale or the Wechsler Intelligence Scale for Children (WISC). In 1916, Terman introduced a grouping of ability according to IQ's obtained on the Stanford-Binet (Terman and Merrill, 1937). This system became widely used and, in fact, became the standard classification system (Table 1). An IQ of 70 has gained considerable popularity as a cutoff score for the retarded group.

There are a number of difficulties with these scoring criteria. Because an IQ is simply a score obtained on the basis of a restricted sample of behavior, there are

significant limitations as to what can or should be expected of it, even if the tests are perfectly reliable and children are always able to put forth their best efforts. Furthermore, no cutoff score will ever be adequate to define mental retardation independent of the setting in which the individual finds himself. Different skills and abilities are required at different ages and in different environments. Retardation must therefore be gauged in large part against current environmental demands.

Apart from this, the cutoff scores for measures of intellectual function are better recognized than the cutoff scores for measures of adaptive behavior. There is open agreement in the major diagnostic systems that performance on the intellectual dimension must be approximately two or more standard deviations below the population mean, which translates into an IQ score of 70 or less on measures with a mean of 100 and a standard deviation of 15 (Reschly et al. 2002)

The American Association defines mental retardation as a significantly sub-average general intellectual function existing concurrently with deficits in adaptive behavior, and manifested during the developmental period. In this definition the retarded person is judged in terms of his success with the developmental tasks appropriate for his age: in the preschool period sensorimotor behaviors assume greatest importance, while during the school years academic ability is of first interest, and during adulthood economic independence and social recognition. Furthermore, this definition makes it clear that a designation of mental status should be a description of present behavior and implicitly disowns the notion of potential intelligence.

Classification systems

Mentally Retarded or intellectually disabled individuals comprise a very heterogeneous group both in their behavior and in the causes of their deficiency. Different classification systems have been proposed in the past to bring some order in this disarray. Most systems have approached the problem from one of three viewpoints: severity of the handicap, etiology of the symptoms, and the symptom collection.

Causes and Consequences

The causes of poor scholastic performance can be broadly classified into two groups that involve genetics and environment. The present study exclusively aims to focus on genetic causes of PSP however, discussion on medical and varied envi-

ronmental factors remains imperative. There may be genetic basis of various medical problems associated with PSP, and many problems are purely environmental in their origin.

Poor scholastic performance (PSP) shows multiple etiologies. Many reasons are responsible for poor scholastic performance of children involving specific learning disability, attention deficit hyperactivity disorder, low IQ level, emotional problems and psychiatric disorders. Other reasons involve a poor socio-cultural home environment and additional environmental causes.

The modest beginning of the investigation of the genetic basis of mental deficiency started long back in 1938 with a preliminary study of patients confined to hospital institutions (Penrose, 1938). In recent years focus was on identification of smaller and smaller chromosome variations associated with disease (Lucy Raymond and Tarpey, 2006).

Abnormal development of a child that leads to mental retardation may be due to trauma before birth caused by an infection or exposure to alcohol, drugs, or other toxins and trauma during birth caused by deprivation of oxygen or premature delivery of a new born child. Inherited disorders involve point mutation(s) and gross chromosomal abnormalities.

Certain point mutations cause metabolic disorders that lead to mental retardation phenotype such as phenylketonuria (PKU). On the other hand, chromosomal abnormality such as Down syndrome demonstrates peculiar morphological and abnormal behavioral traits. The average IQ of matured persons with Down syndrome remains 50 that remain widely variable (Malt et al. 2013).

Prevalence

According to WHO estimates globally more than 450 million people suffer from mental disorders. Currently, mental and behavioral disorders account for 12% of the global burden of disease. This is likely to increase to 15% by 2020. The major proportions of mental disorders come from low- and middle-income countries. The problem is further complicated by a lack of adequate trained manpower and a low priority of mental health in health policy (Reddy et al. 2013). In India, mental disorders have a prevalence of 1.05%. Urban population has slightly higher rate being at 1.1% as compared to rural being at 1.008%. Age was found to be highly correlated with prevalence among children of rural areas (Lakhan et al. 2015).

The prevalence of mental retardation is influenced by a great number of

environmental factors such as community, age, racial and ethnic background, geographic region, and sex (Hernandez and Blazer, 2006). Social integration of a moderately mental retardate will be more difficult in a competitive, industrialized community than in a rural environment with the long-term support of an old fashioned, extended family (Durkin et al. 1995). The severely retarded are mostly identified before the age of one year, especially in the presence of physical abnormalities such as hydrocephaly, spasticity, and sensorial disturbances. Mildly mentally retarded individuals with IQ's ranging between 50 and 70 are recognized at school age (Boat and Wu, 2015). Once the critical period of adolescence and school attendance is over, however, many of the mildly mentally handicapped are assimilated into society and join the ranks of the dull-normal, living for the most part in marginal socio economic circumstances.

Almost all studies dealing with mental sub-normality in children report a higher incidence in males than in females. Moreover, in addition to the data collected from population and institution surveys, recent studies of family pedigrees more specifically demonstrate that X-linked recessive disorders represent a substantial proportion of mentally retarded males (Raymond, 2006).

Involvement of Chromosomes in Mental Disability

There are genetic components to mental disability. Examination of persons with chromosomal variations and mental disabilities may be a way of overcoming difficulties faced with the proper diagnostic processes. Unfortunately, chromosomal analysis is rarely undertaken in subjects with psychiatric disorders. However, the rate of chromosomal abnormality has significantly increased in persons with learning disability, and may be as high as 20% in those with mild learning disability (Gostason et al. 1991).

It has been established in many other medical conditions with a genetic basis that chromosomal variations, either by direct gene disorder or by positional effects, can produce identical or similar phenotypes to those caused by point mutations and their existence has greatly facilitated the physical mapping and cloning of candidate genes (Collins, 1992, 1995).

Once a chromosomal anomaly is detected in a subject with mental disability, it may be considered noncoincidental and related to the disorder if one or more of the following criteria are met: (a) the chromosomal abnormality is rare and there are independent reports of the abnormality being associated with mental disability;

(b) there is proximity of the abnormality with a region of suggestive linkage findings; or (c) there is cosegregation of the abnormality with mental disability within the patient's family (Evans et al. 2001).

Some variations in chromosomes are very small and they only involve a single gene called single gene disorders. However, when variations in chromosomes are large enough and can be seen under light microscope, they are called chromosome anomalies or aberrations. There are many types of chromosome anomalies.

Chromosome anomalies usually occur when there is an error in cell division following meiosis or mitosis. They can be organized into two basic groups viz. Numerical anomalies (aneuploidy or an abnormal number of chromosomes) and Structural anomalies. Numerical anomalies occur due to nondisjunction where abnormal numbers of chromosomes may find their way into gametes, and a disorder of chromosome numbers may result.

Common Chromosomal Anomalies in Mental Deficiency

Down syndrome

Down syndrome is unique in its prominent role in exploring biology of mental retardation for the first time in 1866 by John Longdon Down whose contribution was significant in understanding biology of normal and abnormal development (Down, 1866). The discovery of an extra 21 chromosome (trisomy 21) in the cells of individuals with Down syndrome exhibiting 47 chromosomes in place of 46 normal numbers by Professor Lejeune in 1959 established role of chromosome variations in development.

This was the discovery of chromosome aneuploidy in man that firmly established study of chromosome called cytogenetic as bona fide medical discipline (Smith and Warren, 1985; Patterson, 2009). Karyotype of normal human exhibits that chromosome 21 is one of the smallest autosomes, comprising nearly 1.9% of human DNA, Non-disjunction of this autosome during formation of the gametes at meiosis I or meiosis II in one of the parents result in Down syndrome. Down syndrome is the most common genetic form of mental retardation followed by X-linked mental retardation.

Fragile X syndrome

Fragile X syndrome (FXS) causes learning disabilities and cognitive impairment. Usually, the penetrance of this genetic condition is higher in males as compared to females because males are hemizygous having single X-chromosome (McKusick, 1983). The maximum numbers of single genes that cause mental retardation are located on X chromosome. The first identified gene was FMR1 that causes fragile X syndrome being the commonest single gene abnormality.

Fragile sites are heritable points on a chromosome which are susceptible to breakage and are consistently found on certain human chromosomes (Sutherland, 1982a, 1982b). These sites may represent structural chromosome mutations. The fragile site on the long arm of the X (Xq 27.3) is associated with a form of familial X-linked mental retardation (Lubs, 1969). It has been estimated that from one third to one half of all families with (nonspecific) X-linked mental retardation express the fragile site in some proportion of their cells (Brookwell et al, 1982).

The fragile site can be detected in chromosome preparations from lymphocytes grown in tissue culture media lacking folic acid and thymidine. Specific culture conditions can significantly alter the frequency with which the fragile site is expressed. Female carriers of this disorder may or may not express the fragile Xj some express it in only a small number of their cells. Thus, Xq fragile site demonstration in such carriers and in some affected males may be difficult due to a low level of expression. As with most X-linked recessive disorders, carrier detection is an important: aspect of genetic counseling for families with this syndrome.

Males with Fragile X syndrome show mild to moderate intellectual disability whereas considerable proportions of females with this disorder being nearly one-third remain intellectually disabled. Majority of males and nearly half the females with fragile X syndrome show characteristic morphological features involving long and narrow face, prominent jaw and forehead, flat feet, large ears and in males additionally enlarged testicles after puberty .

A mutation of FMR-1 known as fragile-X mental retardation gene located on the X- chromosome causes this syndromic condition. The FMR1 gene codes a protein known as fragile X mental retardation protein (FMRP) required for normal brain development. Incidence was noted in all races and ethnic groups. Nearly 10% affected males have severe intellectual disability (Hagerman and Hagerman, 2002). In Fragile X syndrome, CGG pattern in a part of DNA in FMR1 gene is repeated

many times. In majority of persons, the number of repeats remains small at 5 to 44 repeats, which is common whereas; when the number of repeats is very high being greater than 200 repeats, the gene turns off and protein production is halted leading to development of FXS which is also known as trinucleotide repeat disorder. This is heritable condition transmitted from parents. Intermediate number of repeats at nearly 45 to 54 may have somewhat higher probability of having some symptoms but they do not have Fragile X syndrome (Willemsen et al. 2011).

Sequence repeats in the range of 55-200 do not develop FXS but there may be development of other condition known as fragile X-associated disorder. Couple with premutation can transmit this to their children with the same condition or full mutation leading to development of FXS (Gallagher and Hallahan, 2012).

The global prevalence of fragile X syndrome (FXS) in males is estimated nearly 1 in 4,000 while in females it is nearly 1 in 5,000. It has been demonstrated in both animal and human studies that changes in the environment radically impact behavior (Restivo et al. 2005). A peaceful high quality home environment has been found associated with fewer autistic behaviors, higher IQ scores and better adaptability in children with Fragile X syndrome (Glaser et al. 2003).

The new research and developments in mental disability did not evolve at once. Some filtered through gradually and slowly following the growing evidence; others were born more quickly with the support of laboratory tests. Therapy as a more immediately attainable goal, the knowledge is used to inform individuals, couples and families about the nature of the disorder and the possibilities of prevention of genetically determined mental disability leading to poor scholastic performance in children, a major task for a genetic centre in the combat against the human suffering by genetic disease.

BIBLIOGRAPHY

Deary, I. J, Spinath F.M; Bates T.C. (2006): Genetics of intelligence. European Journal of Human Genetics, 14, 690-700.

Okoye, N. N. (1982). Why students fail examinations: Psychology for everyday living; A Nigeria Journal of Applied Psychology 11(2): 1 - 5.

SiqueiraI, C. M. and Gurge-Giannetti, J. (2011). Poor school performance: an updated review. Revista da Associação Médica Brasileira, 5(1): 78-8

Luckasson, R., Coulter, D. L., Polloway, E. A., Reiss, S., Schalock, R. L., Snell, 98

- M. E., Spitalnick, D. M., & Stark, J. A. (1992): *Mental retardation: Definition, classification, and systems of supports* (9th Edition). Washington, DC: American Association on Mental Retardation
- Tredgold, A. F., and Soddy, K. 1956. *A textbook of mental deficiency*. 9th ed. Baltimore: Williams & Wilkins
- Doll, Edgar A *The Measurement of Social Competence: A Manual for the Vineland Social Maturity Scale* 1953 Minneapolis Educational Test Bureau (720 Washington Avenue, S. E.) 641
- Terman, L. M. and Merrill, M. A. (1937): *Measuring Intelligence: A Guide to the Administration of the New Revised Stanford-Binet Tests of Intelligence*. Boston Houghton Mifflin Co 461.
- Siqueira I, C. M. and Gurge-Giannetti, J. (2011). Poor school performance: an updated review. *Revista da Associação Médica Brasileira*, 5(1): 78-86
- Karande S, Kulkarni M. (2005): Poor school performance. *Indian J Pediatr.* ,72:961-7.
- Valiente, C., Swanson, J., & Eisenberg, N. (2012). Linking Students' Emotions and Academic Achievement: When and Why Emotions Matter. *Child Development Perspectives*, 6(2), 129-135.
- Blair, C. (2002): School readiness. Integrating cognition and emotion in a neurobiological conceptualization of children's functioning at school entry. *Am Psychol.* 57(2):111-27
- Raver, C.C. (2002); Emotions matter: Making the case for the role of young children's emotional development for early school readiness. *Social Policy Report*, Society for Research in Child Development. 16:3-18.
- Penrose, L. S. (Lionel Sharples) (1938): *A clinical and genetic study of 1280 cases of mental defect*. H. M. Stationery off, London.
- Raymond, F. and Tarpey, P. (2006): The genetics of mental retardation. *Human Molecular Genetics*, 15(1): 110-116.
- Reddy, V.B; Gupta, A; Lohiya, A, Kharya, P. (2013): Mental health issues and challenges in India. *IJSER*, 3:1-3.
- Hernandez, L.M; Blazer, D.G; editors. (2006): *Genes, Behavior, and the Social Environment: Moving Beyond the Nature/Nurture Debate*. Washington (DC): National Academies Press (US).
- Durkin, M.S; Wang, W; Shrout, P.E; Zaman, S.S; Hasan, Z.M; Desai P, et al.

- (1995): Evaluating a ten question screen for childhood disability
- Boat, T.F. and Wu, J.T. editors (2015): Mental Disorders and Disabilities Among Low-Income Children. Washington (DC): National Academies Press (US);
- Raymond, F. L. (2006). X linked mental retardation: a clinical guide. Journal of Medical Genetics, 43(3), 193-200.
- Thompson, J.S. and Thompson, M.W. (1986): Genetics in Medicine. W.B Saunders Co., Philadelphia, Pennsylvania.
- Gostason, R; Wahlstrom, ; Johannisson, T; Holmqvist, D. (1991): Chromosomal aberrations in the mildly mentally retarded. J Men Defic Res; 35: 246- 246.
- Evans K.L; Muir, W.J; Blackwood, D.H; Porteous, D.J. (2001): Nuts and bolts of psychiatric genetics: building on the Human Genome Project. Trends 92 Genet; 17: 35-40
- Down, J. L. H. (1866): Observations on an Ethnic Classification of Idiots. London Hospital Reports, 3:259-262,
- Patterson D (2009): Molecular genetic analysis of Down syndrome. Hum Genet. 126(1):195-214.
- McKusick, V.A. (1983): Human Genetics. 3rd Edition, Prentice-Hall foundations of modern genetics series.
- Lubs, H. A. (1969): A marker X chromosome. Am. J. Hum. Genet, 21: 231-244.
- Brookwell, R; Daniel, A; Turner, G; Fishburn, J. (1982): The fragile X(q27) form of X-linked mental retardation: FudR as an inducing agent for fraX(q27) expression in lymphocytes, fibroblasts and amniocytes. Am J Med Genet, 13: 139-148.
- Hagerman, R.J. and Hagerman, P.J., editors. (2002): FXS: diagnosis, treatment, and research. Baltimore (MD): Johns Hopkins University Press.

भारतीय जीवन बीमा निगम की कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुनीता मौर्य
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग,
हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

डॉ. एन. आर. दास
प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग,
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान,
भोपाल (म.प्र.)

परिचय:—

प्रस्तुत शोध में हमने भारतीय जीवन बीमानिगम के 2008–09 से 2017–18 तक के दसवर्षों के स्थिति विवरण पत्रों का विश्लेषण कर के संस्था की कार्यशीलपूँजी को जानने का प्रयास किया है। कार्यशील पूँजी को किसी भी व्यवसाय का जीवन रक्त माना जाता है। इस के प्रभावी प्रावधान व्यवसाय को सफलता की ओर ले जाते हैं। जबकि कार्यशील पूँजी की अपर्याप्तता या कुप्रबंध व्यवसाय को असफलता की ओर ले जाते हैं।

शोधसंरचना:—

हमारे द्वारा की जानेवाली शोध पूर्ण रूप से व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक है जिसमें हमारे द्वारा द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया जावेगा। आँकड़ों को एकत्रित करने के निम्नलिखित स्रोत हैं, बजट, सांख्यिकी रिपोर्ट, वार्षिक प्रतिवेदन तथा प्रकाशित दस्तावेज है।

शोधकार्य की सीमाएँ:—

- (1) यहवित्तीय विवरणों का विश्लेषण मुख्यतः द्वितीय समकों पर आधारित है।
- (2) समकों की विश्वसनीयता मुख्यतः अंकक्षण पर पूर्णतः निर्भर करती है।

अध्ययन क्षेत्र:—

शोध प्रबंध का अध्ययन क्षेत्र मुख्यतः भारतीय जीवन बीमा निगम है, इसका क्षेत्र व्यापक है।

अध्ययन का उद्देश्य:—

1. भारतीय जीवन बीमा निगम को कार्यशील पूँजी का अध्ययन करना।
2. कार्यशीलपूँजी के अंतर को ज्ञात करना।

चालूअनुपात:—

वर्तमान अनुपातों में नगद और बैंकबैलेंस, बिक्री योग्य प्रतिभूतियाँ, बिल्लेनदारी, काल ऋण और

सुझाव:-

प्रस्तुत शोध मेंदिये गये निष्कर्ष के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत किया गया है-

- (1) संस्था की चालू संपत्तियों को ज्यादा बढ़ाया गया है। जिससे फण्ड का उपयोग चालू संपत्तियों में किया गया है।
- (2) चालू दायित्व का भुगतान टोककर फण्ड का उपयोग किया जा रहा है।
- (3) संस्था में चालू अनुपात ज्यादा दिखाई दे रहा है। जबकि आदर्श अनुपात 2:1 का है। इसलिये संस्था को यह अनुपात कुछ कम करना चाहिए।

सन्दर्भ:-

BarNiv,R.AndR.A.Hershbarger.,1990,ClassifyingFinancialDistressintheLife InsuranceIndustry,JournalofRisk and Insurance, 57:110-136.

- ▶ BarNiv,R.,1990,AccountingProcedures,MarketData,Cash-FlowFiguresan
- ▶ Ambrose,J.M.,andJ.A.Seward.,1988,Best'sRatingsFinancial RatiosandPrir Probabilities in InsolvencyPrediction,JournalofRisk and Insurance,55: 229-244.
- ▶ AmericanEconomicReview,Papers and Proceedings87(2):184-88.
- ▶ Anderson, J. and Brown,R.,2005, "Risk and Insurance",SocietyofActuaries,USA.
- ▶ Arestis,P.,andP.Demetriades.,1997,FinancialDevelopmentandEconomicGr owth: Assessing the Evidence,EconomicJournal,107(442): 783-799.

भारतीय जीवन बीमा निगम के लाभ-हानि खातों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुनीता मौर्य (शोधार्थी,)

वाणिज्य विभाग,

हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

भोपाल (म.प्र.)

डॉ. एन. आर. दास

प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग,

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान,

भोपाल (म.प्र.)

परिचय:-

प्रस्तुत शोध में हमने भारतीय जीवन बीमा निगम के 2008-09 से 2017-18 तक के दस वर्षों के लाभ-हानि विवरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है इस में हमने संस्था की शुद्ध लाभ पता लगाने का प्रयास किया है। संस्थाका शुद्ध लाभ कितने प्रतिशत से बढ़ रहा है तथा इन लाभों का किस ढंग से प्रयोग किया जा रहा है।

शोध संरचना,

हमारे द्वारा की जानेवाली शोध पूर्ण रूप से व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक है जिसमें हमारे द्वारा द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया जावेगा। आँकड़ों को एकत्रित करने के निम्नलिखित स्रोत हैं, बजट, सांख्यिकी की रिपोर्ट, वार्षिक प्रतिवेदन तथा प्रकाशित दस्तावेज है।

अध्ययन क्षेत्र:-

शोध प्रबंध का अध्ययन क्षेत्र मुख्यतः भारतीय जीवन बीमा निगम है, इसका क्षेत्र व्यापक है।

अध्ययन का उद्देश्य:-

- (1) संस्था की लाभ-हानि का पता लगाना।
- (2) संस्था के लाभों का कि सढंग से उपयोग किया जा रहा है।

अध्ययन की सीमाएँ:-

- (1) यह विश्लेषण मुख्यतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है।
- (2) समंकों की विश्वसनीयता मुख्यतः अंकक्षण पर निर्भर करती है।

प्राथमिक अनुपात:-

किसी भी व्यवसाय का प्राथमिक उद्देश्य लाभ कमाना होता है, इसलिए लाभ और सेल्स रिटर्न

सुझाव:-

- (1) संस्थाको 10 वर्षों तक लगातार लाभ की स्थिति में रही है। परंतु प्रीमियम की तुलना में फिर भी ज्यादा लाभ नहीं है। अतः संस्था को लाभ को बढ़ाना होगा।
- (2) संस्था के लाभों का प्रयोग उचित दर से लाभांश में करना होगा।
- (3) संस्था के लाभों का प्रयोग दायित्वों के भुगतान के लिये भी उचित दर से रखना होगा। फिर भी संस्था की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ है।

सन्दर्भ:-

- ▶ BarNiv, R., and J.B. McDonald., 1992, Identifying Financial Distress in the Insurance Industry: A Synthesis of Methodological and Empirical Issues, *Journal of Risk and Insurance*, 59: 543-574.
- ▶ BarNiv, R., and M.L. Smith., 1987, Underwriting, Investment and Solvency, *Journal of Insurance Regulation*, 5: 409-428.
- ▶ Barresse, J., 1990, Assessing the Financial Condition of Insurers, *CPCU Journal*, 43: 37-46.
- ▶ Beenstock M., G. Dickinson, and S. Khajuria., 1986, "The Determination of Life Premiums: An International Cross-Section Analysis 1970-1981". *Insurance, Mathematics, and Economics* 5: 261-70.
- ▶ Ben-vid, D., 1993, "Equalizing Exchange: Trade Liberalization and Economic Convergence", *The Quarterly Journal of Economics* 108(3): 653-679.
- ▶ Ambrose, J.M., and J.A. Seward., 1988, Best's Ratings Financial Ratios and Prior Probabilities in Insolvency Prediction, *Journal of Risk and Insurance*, 55: 229-244.
- ▶ *American Economic Review*, Papers and Proceedings 87(2): 184-88.
- ▶ Anderson, J. and Brown, R., 2005, "Risk and Insurance", *Society of Actuaries, USA*.
- ▶ Arestis, P., and P. Demetriades., 1997, Financial Development and Economic Growth: Assessing the Evidence, *Economic Journal*, 107(442): 783-799.

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की परिवहन सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन (भोपाल जिले विशेष संदर्भ में)

अंकित जैन (शोधार्थी)

(वाणिज्य संकाय)

शा.गीतांजली कान्या स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, भोपाल

डॉ. महेन्द्र सिंघई

सहा.प्राध्यापक, (वाणिज्य संकाय)

शा.गीतांजली कान्या स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, भोपाल

परिवहन का अर्थ

परिवहन का अर्थ उन गतिविधियों से है, जिनके अंतर्गत सामान और व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने-ले जाने में सहायता मिलती है। व्यवसाय में इसको एक सहायक क्रिया के रूप में माना जाता है, जो कच्चे माल को उत्पादन के स्थान तक और तैयार सामान को उपभोग/बिक्री के लिए लोगों तक पहुँचाने में व्यापार और उद्योग की सहायता करती है। जो व्यक्ति अथवा व्यावसायिक इकाईयाँ इस गतिविधि में लगी हैं, उन्हें ट्रांसपोर्टर कहा जाता है। ट्रांसपोर्टर कच्चे माल, तैयार सामान, व्यक्तियों आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

परिवहन का महत्व

ऊपर हम विचार विमर्श कर चुके हैं कि परिवहन, दूरी की बाध को समाप्त कर देता है, क्योंकि आजकल एक स्थान पर बनाई गई (तैयार की गई) वस्तु अलग-अलग स्थानों पर उपलब्ध हो जाती है। चाहे पूरे संसार में दूरी जितनी भी हो। बिना परिवहन के कोई भी व्यापार एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है।

1. निर्माताओं और उत्पादकों को कच्चा माल उपलब्ध कराना = परिवहन के माध्यम से ही कच्चे माल को उसके उपलब्ध होने के स्थानों से उन स्थानों तक ले जाना संभव हो पाता है, जहाँ उसे संसाधित तथा एकत्रित करके उससे अ(निर्मित अथवा पूर्णतः निर्मित वस्तुएँ तैयार की जाती हैं।
2. उपभोक्ताओं को वस्तुएं उपलब्ध कराना = परिवहन की सहायता से वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक बड़ी आसानी और तेजी से पहुँचाया जा सकता है। इस प्रकार दूर-दराज के स्थानों पर तैयार सामान देश के विभिन्न क्षेत्रों में पैफले उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग किया जा सकता है।
3. लोगों का जीवन-स्तर बेहतर बनाना = परिवहन-साधनों की सहायता से कम लागत में बड़े पैमाने पर सामान का उत्पादन होता है। इससे लोगों में अपनी पसंद का और अलग-अलग कीमत वाला बढ़िया किस्म का सामान खरीदने की इच्छा जागती है। इससे लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठता है।
4. कम लागत में अधिक उत्पादन को सुविधजनक बनाता है = हम जानते हैं कि बड़े पैमाने पर उत्पादन सदा हमारी पसंद के स्थान पर होना सम्भव नहीं है, क्योंकि इसके लिए बड़े बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है, विशेषतः जमीन

की, जो आसानी से हर जगह उपलब्ध नहीं होती है। परन्तु परिवहन, सुगमता से मानव शक्ति एवं आवश्यक कच्चा माल विनिर्माण के लिए अंतिम रूप से चयनित स्थान पर उपलब्ध करा देता है। बड़े पैमाने पर उत्पादन से प्रति इकाई लागत कम आती है।

5. आपातकाल और प्राकृतिक आपदा की स्थिति में सहायता पहुँचाना = यु(या आंतरिक गड़बड़ी (अशांति) जैसी राष्ट्रीय संकट की स्थिति में परिवहन सशस्त्रा सेनाओं और उनके लिए जरूरी सामान को शीघ्रता से संकट के स्थान पर पहुँचाने में मदद करता है।

6. रोजगार सृजन में सहायता करना = परिवहन से लोगो को ड्राइवर, कंडक्टर, पायलट, विमान कर्मचारी, समुद्री जहाज के कैप्टन आदि के पदों पर रोजगार मिलता है। इन लोगों को परिवहन व्यवसाय में प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। इसके अलावा कुछ लोगों को परिवहन से अप्रत्यक्ष रूप से भी रोजगार मिलता है जैसे परिवहन के विभिन्न साधनों और परिवहन के उपकरणों का निर्माण करने वाले कारखानों में लोगों को काम मिलता है। लोग परिवहन के साधनों की मरम्मत और रख-रखाव के लिए सुविधाजनक स्थानों पर सर्विस सेंटर भी खोल सकते हैं।

7. मजदूरों की गतिशीलता में सहायता = परिवहन सुविधाएँ मजदूरों को कार्य के स्थानों तक पहुँचाने में बहुत मदद करती हैं। आपको मालूम होगा कि दूसरे देशों के उद्योगों और कारखानों में काम करने के लिए हमारे देश से लोग दूसरे देश जाते हैं और विदेशी भी हमारे देश में कार्य करने के लिए आते हैं। देश में भी लोग रोजगार की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। साथ ही यह हमेशा संभव नहीं होता कि कारखाने के आस-पास से ही मजदूर मिल जाएँ। अधिकांश उद्योगों में लोगों को उनके निवास स्थान से कार्य स्थल तक लाने ले जाने के लिए परिवहन की अपनी व्यवस्था है।

8. राष्ट्रों को निकट लाने में सहायता = परिवहन से लोगों तथा माल के एक देश से दूसरे देश में आवागमन में सहायता मिलती है। इससे विभिन्न देशों के लोगों में संस्कृति, विचारों और रीति रिवाजों का आदान-प्रदान होता है। इससे लोगों में अन्य देशों के बारे में बेहतर समझ तथा ज्ञान उत्पन्न होता है। इस प्रकार परिवहन अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा बढ़ाने में सहायता करता है।

परिवहन की विधि

परिवहन की विधि (या परिवहन के साधन या परिवहन प्रणाली या परिवहन का तरीका या परिवहन के रूप) वह शब्द है जो वस्तुतः परिवहन के अलग-अलग तरीकों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। सबसे प्रमुख परिवहन के साधन हैं हवाई परिवहन, रेल परिवहन सड़क परिवहन और जल परिवहन, लेकिन अन्य तरीके भी उपलब्ध हैं जिनमें पाइप लाइन, केबल परिवहन, अंतरिक्ष परिवहन और ऑफ-रोड परिवहन भी शामिल हैं। मानव संचालित परिवहन और पशु चालित परिवहन अपने तरीके का परिवहन है, लेकिन यह सामान्य रूप से अन्य श्रेणियों में आते हैं। सभी परिवहन में कुछ माल परिवहन के लिए उपयुक्त हैं और कुछ लोगों के परिवहन के लिए उपयुक्त हैं।

प्रत्येक परिवहन की विधि को मौलिक रूप से विभिन्न तकनीकी समाधान और कुछ अलग वातावरण की आवश्यकता होती है। प्रत्येक विधि की अपनी बुनियादी सुविधाएं, वाहन, कार्य और अक्सर विभिन्न विनियमन हैं। जो परिवहन एक से अधिक मोड का उपयोग करते हैं उन्हें इंटरमोडल के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

दिल्ली में सार्वजनिक वाहनों और टैक्सी में सफर करने वालों को सुरक्षित, आरामदायक और सस्ती सेवा उपलब्ध हो इसे लेकर परिवहन व्यवस्था में सुधार और नए नियम लागू किए जाने की जरूरत है। यह कहना था इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और विशेषज्ञों का।

कार्यक्रम के संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि जरूरी है कि सार्वजनिक परिवहन सेवा में केंद्र सरकार की ओर ले लागू सभी प्रकार से तकनीकी सुरक्षा उपायों की सिफारिशों को सख्ती से लागू किया जाय। इसके साथ ही परिवहन सेवा देने वाले ऑपरेटर्स और चालकों को विशेष प्रशिक्षण दिए जाने पर भी जोड़ दिया। वक्ताओं ने कहा कि चालकों को शहर के सभी प्रमुख मार्ग और पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। ताकि सफर करने वाले आम लोग और पर्यटकों को बेहतर सेवा प्राप्त हो सके।

इसके अलावा सभी वाहनों में वाहन के डैश बोर्ड पर कैमरा इंस्टॉल होना, पीछे की सीट के गेट में चाइल्ड लॉक, पैनिक बटन जैसी सुविधा अनिवार्य किए जाने पर बल दिया गया। मंगलवार को कार्यक्रम में यातायात सुरक्षा पर बोलते हुए ट्रैफिक की संयुक्त पुलिस आयुक्त गरिमा भटनागर ने कहा कि सबसे ज्यादा जरूरी है, चालकों का ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक होना।

वाहन चलाते हुए लेन का ध्यान रखना, सही स्थान पर पार्किंग, सही स्थान पर सवारी को उतारने और बिठाने की जाकारी होने के साथ ही उन्हें ट्रैफिक नियमों की भी सामान्य जानकारी होनी चाहिए। इसके साथ ही सवारियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। क्योंकि आए दिन पुलिस को इसकी शिकायतें मिलती रहती है।

परिवहन के माध्यम

मोटर सायकल, ट्रक, बस, कार, जीप में बैठकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए हमें सड़क मार्ग की आवश्यकता होती है। रेलगाड़ी और मालगाड़ियां रेल की पटरियों पर ही दौड़ती हैं। जल मार्ग से जाने के लिए हम नौका, स्टीमर, जलयान का उपयोग करते हैं, उसी प्रकार हेलीकाप्टर और हवाई जहाज के लिए हवा की आवश्यकता होती है। अतः परिवहन के सभी साधनों के लिए एक माध्यम विशेष की आवश्यकता होती है। परिवहन के माध्यम हैं-

1. सड़क परिवहन-

सड़क मार्ग से परिवहन जानवरों के द्वारा (घोड़े, ऊँट, गधे) जानवरों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों तथा मोटर वाहन (वैन, ट्रक आदि) से किया जाता है। जानवर तथा जानवरों के द्वारा खींचे जाने वाले वाहन का उपयोग कम मात्रा में गांवों तक ही सीमित है। वैन शहर के भीतर स्थानीय परिवहन के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। अधिकांश माल ट्रकों के द्वारा ढोया जाता है जो सुगम, कम खर्चीले तथा सुरक्षित माने जाते हैं।

2. रेल परिवहन-

रेल परिवहन से अभिप्राय यात्रियों एवं माल का रेलगाड़ी के माध्यम से आवागमन से है जो इसी उद्देश्य से बिछाई गई रेल की पटरियों पर चलती हैं। दूर स्थानों में ले जाने की क्षमता की दृष्टि से रेल परिवहन कम खर्चीला एवं सुरक्षित है। भारत में रेल परिवहन भारत सरकार के स्वामित्व में है तथा माल के परिवहन में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

3. जल परिवहन-

जल परिवहन से अभिप्राय माल एवं यात्रियों को जल मार्ग से लाने व ले जाने से है। जिसमें बोट, स्टीमर, लॉच, जहाज आदि के माध्यमों को उपयोग में लाया जाता है। यह संचालन देश के भीतर अथवा एक देश से दूसरे देश में हो सकता है। भारत में परिवहन के इस साधन का उपयोग कम है क्योंकि देश के भीतर जलमार्ग सीमित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए समुद्र एवं महासागर से परिवहन तटवर्ती क्षेत्रों में बहुत सामान्य है। परिवहन का यह माध्यम लम्बी दूरी तक भारी माल को ले जाने के लिए कम खर्चीला है।

4. वायु (हवाई) परिवहन-

माल लाने ले जाने एवं व्यक्तियों के आने जाने के लिए हवाई जहाज के उपयोग को वायु परिवहन कहते हैं। यह परिवहन का सबसे तेज गति वाला माध्यम है तथा इसका अधिकांश उपयोग यात्रियों को लाने, ले जाने के लिए होता है। जहां तक वस्तुओं का सम्बन्ध है वायु परिवहन का प्रयोग उच्चमूल्य वाली हल्की वस्तुओं के लिए होता है जैसे कि दवाए, मशीन के पुर्जे, इलैक्ट्रॉनिक सामान आदि। बड़े माल वाहक हवाई जहाजों की व्यवस्था के कारण अब माल ढोने के लिए हवाई परिवहन का उपयोग देश के भीतर एवं विदेशी व्यापार के लिए काफी बढ़ गया है।

पेट्रोल और डीजल के दाम में बढ़ोत्तरी की वजह से लोकल रूट और लंबी दूरी में चलने वाले निजी वाहन संचालकों ने किराया बढ़ा दिया है। ऐसे में उन रूटों पर लोगों को ज्यादा दिक्कत हो रही है जिनपर परिवहन विभाग के वाहन संचालित नहीं होते हैं। कई रूट पर निजी वाहन चालक अब यात्रियों से मनमाना किराया वसूल रहे हैं। पेट्रो मूल्य में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। जिसके चलते निजी वाहन संचालकों ने अपने किराए में मनमानी बढ़ोत्तरी कर दी है। निजामाबाद संवाददाता के अनुसार तहसील क्षेत्र में सरकारी परिवहन की सुविधा अब तक मौजूद नहीं है। जिसके चलते क्षेत्र के लोगों को निजी यात्री वाहनों का ही प्रयोग कहीं आने-जाने के लिए करना पड़ता है। वाहन यात्री वाहन संचालन पेट्रो मूल्य में लगातार की जा रही बढ़ोत्तरी का बहाना बना कर अब यात्रियों से मनमानी वसूली करने लगे हैं। स्थानीय व्यापारी संजय गुप्ता ने बताया कि लोकल रूटों पर निजी वाहन संचालक किराया डेढ़ से दो गुना तक कर दिया है। कस्बे में अब तक सरकारी परिवहन सुविधा न होने का भी निजी यात्री वाहन संचालक काफी फायदा उठा रहे हैं और आम जनता का शोषण किया जा रहा है। अहरौला संवाददाता के अनुसार क्षेत्र में निजी यात्री वाहनों द्वारा यात्रियों से 3.30 रुपये प्रति किमी की दर से किराया वसूल किया जा रहा है। समाजसेवी लक्ष्मी चौबे का कहना है कि जहां का किराया पहले छह रुपये लगता था वहां का अब 10 रुपये वसूला जा रहा है। ढाई से तीन किमी की यात्रा के एवज में 10 रुपये का भुगतान करना पड़ रहा है। व्यवसायी राजेश चौबे का कहना है कि अक्सर ही किराये को लेकर आटो व टैक्सी वालों से यात्रियों की तकड़क भी हो रही है।

सन्दर्भ-

1. कूपर एट अल., 1998 281
2. स्वाइन फ्लू अमेरिका यात्रा पर चेतावनी संकेत ईयू . गार्जियन. 29 अप्रैल 2007.
3. कूपर एट अल., 1998 279
4. लेटाओ, 1992: 6-7
5. ? "What is the difference between a road and a street?". Word FAQ. Le&ico Publishing Group. 2007. अभिगमन तिथि 24 मार्च 2007.